Discover your divinity with us
A/C Showroom
ज्ञान गंगा ॐ मूर्ति माला केन्द्र
उजाला भवन स्टेशन रोड, दुर्ग
0788-4030383, 3293199
भगवान के वस्त्र, श्रृंगार मूर्तियां एवं समस्त पूजन सामग्री संगमरमर व पीतल की मूर्तियां राशि रत्न एवं उपरत्न उपलब्ध

राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

# समय दर्शन

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

श्री दुर्ग शहर में सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य
माँ दुर्गा उपासक मां बगुलामुखी, माँ कामख्या, माँ भद्रकाली, माँ शतचंडी की असीम कृपा साधना द्वारा समस्त समस्याओं का मार्ग दर्शन हेतु
पं. एम.पी. शर्मा/
मो. 8109922001
फीस 251/- मात्र
पताः- श्री दुर्गा ज्योतिष कार्यालय सिकोला भाठा, सब्जी मार्केट के सामने, धमधा नाका, दुर्ग

वर्ष 14, अंक 91 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये दुर्ग, शुक्रवार 17 जनवरी 2025 www.samaydarshan.in

## संक्षिप्त समाचार

### पी आर खूंटे ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा

**रायपुर ।** प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष और पूर्व सांसद पी.आर. खूंटे ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज को अपना इस्तीफा भेजते हुए कांग्रेस और भाजपा दोनों पर निशाना साधा है। खूंटे ने अपने इस्तीफे में आरोप लगाया कि, दोनों पार्टियों ने छत्तीसगढ़ के गरीब और मूल निवासी लोगों का शोषण किया है और उनकी समस्याओं का समाधान करने में विफल रही हैं। उन्होंने कहा कि,मैने किसी भी दबाव में आकर इस्तीफा नहीं दिया है द्य उन्होंने कांग्रेस पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष पद और प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रहे हैं। उन्होंने भाजपा में शामिल होने के दावे को भी खारिज कर दिया। वे पहले भाजपा में भी रह चुके हैं और अब वापस जाने का कोई सवाल ही नहीं है। पूर्व सांसद पी.आर. खूंटे सारंगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद और पलारी विधानसभा क्षेत्र के विधायक रह चुके हैं। उनके इस्तीफे को छत्तीसगढ़ कांग्रेस के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। आगामी चुनावों के मद्देनजर, उनका यह निर्णय कांग्रेस के लिए राजनीतिक चुनौतियां खड़ी कर सकता है। वहीं खूंटे सतनामी समाज के एक बड़े नेता के रूप में भी जाने जाते हैं। उनका इस्तीफा छत्तीसगढ़ की राजनीति में नए समीकरण पैदा कर सकता है। उनके इस फैसले के पीछे की वजह पार्टी और सरकार की नीतियों से असंतोष बताया जा रहा है। हालांकि, उन्होंने नई पार्टी बनाने या किसी अन्य दल में शामिल होने के सवाल पर अभी कुछ भी स्पष्ट नहीं किया है। खूंटे के इस फैसले ने राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय है।

### राहुल गांधी न देश समझते हैं, न संविधान रविशंकर प्रसाद

**पटना।** कांग्रेस नेता और सांसद राहुल गांधी के भारतीय राज्यों से लड़ाई लड़ने के बयान पर पूर्व केंद्रीय मंत्री और पटना साहिब से भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने पलटवार करते हुए कहा कि राहुल गांधी न देश समझते हैं, न संविधान। पटना में पत्रकारों से चर्चा के दौरान सांसद रविशंकर प्रसाद ने कहा कि आज तो उन्होंने यहां तक कह दिया कि वे %इंडियन स्टेट% का भी विरोध करेंगे। राहुल गांधी जिस प्रकार की भाषा बोलते हैं, वह माओवादी भाषा है। हम इसकी भर्त्सना करते हैं। मैं संसद में भी उनको समझा चुका हूं। उनकी आलोचना कर चुका हूं। वे न हिंदुस्तान समझते हैं और न संविधान समझते हैं।

### प्रयागराज से रामनगरी अयोध्या पहुंचा श्रद्धालुओं का उमड़ा जन सैलाब

**अयोध्या ।** रामनगरी में प्रयागराज के महाकुंभ मेले का रेला उमड़ पड़ा। मुख्य मार्ग ही नहीं अयोध्या धाम की गालियां तक जाम हो गईं। जय श्रीराम के जयकारों के अयोध्या पहुंचे श्रद्धालुओं की आस्था से पूरी नगरी राममय हो गई। मंगलवार शाम से शुरू हुआ श्रद्धालुओ का क्रम बुधवार शाम तक नहीं टूटा था। जिला प्रशासन ने सूझ-बूझ दिखाते हुए सभी की स्नान से लेकर दर्शन तक कि व्यवस्थाएं कराई। एक अनुमान के मुताबिक 10 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे हैं।

सरकारी कर्मचारियों को मिली बड़ी सौगात

# कैबिनेट ने 8वें वेतन आयोग के गठन को दी मंजूरी-मोदी

**नई दिल्ली। एजेंसी**

केंद्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए 8वें वेतन आयोग के गठन की मंजूरी दे दी है। इससे संभावित रूप से लाखों लोगों को लाभ मिलेगा। नरेंद्र मोदी के अगुआई वाली सरकार ने जनवरी 2016 में 7वां वेतन आयोग लागू किया था। इसकी सिफारिशें 31 दिसंबर, 2025 को खत्म होंगी। इससे पहले, 4वें, 5वें और 6वें वेतन आयोगों का कार्यकाल 10 साल का था। लागू होने के बाद केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी में बंपर इजाफा हो सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस बार फिटमेंट फैक्टर कम से कम 2.86 तय किया जा सकता है। ऐसा होने पर कर्मचारियों की न्यूनतम बेसिक सैलरी में भी बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। यह 51,480 रुपये हो सकती है। अभी मिनिमम बेसिक सैलरी 18,000 रुपये है। पेंशनभोगियों को भी इसी तरह फायदा मिलेगा। उनकी मिनिमम पेंशन अभी 9,000 रुपये से बढ़कर 25,740 रुपये हो सकती है। 7वें वेतन आयोग के गठन के बाद केंद्रीय कर्मचारियों की न्यूनतम सैलरी में सबसे कम बढ़ोतरी हुई थी। इसमें सैलरी को फिटमेंट फैक्टर के हिसाब से बढ़ाया गया, जिसे 2.57 गुना रखा गया था। इससे बेसिक सैलरी 18,000 रुपये हो गई। अगर इसी फॉर्मूले को आधार माना जाता है, तो 8वें वेतन आयोग में फिटमेंट फैक्टर की अधिकमत रेंज के तहत न्यूनतम सैलरी 26,000 रुपये हो जाएगी। फिटमेंट फैक्टर दरअसल सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के वेतन और पेंशन को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल वाला फॉर्मूला है।

इसके आधार पर अलग-अलग लेवल पर सैलरी में बढ़ोतरी की जाती है। हालांकि, इसमें भत्ते को नहीं जोड़ा जाता है। केंद्रीय कर्मचारियों के संगठनों ने इसके लिए कैबिनेट सचिव से मिलकर 8वें वेतन आयोग का गठन करने की मांग की थी और लगातार ये संगठन सरकार के सामने 8वें वेतन आयोग के गठन का दबाव बना रहे थे. पिछले एक साल में कई बार कर्मचारी यूनियन केंद्र सरकार से स्थिति स्पष्ट करने की मांग कर चुके हैं. पिछले बजट के बाद जब वित्त सचिव टीवी सोमनाथन से इस बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने कहा था कि अभी इस काम के लिए हमारे पास पर्याप्त समय है. अंतिम वेतन आयोग का गठन हुए 10 साल से ज्यादा समय बीत चुका है. आम तौर पर हर 10 साल में अगले वेतन आयोग का गठन हो जाता है. पुराने वेतन आयोग की जगह पर नए वेतन आयोग की सिफारिशों के लागू होने के बीच भी सामान्यत: 10 साल का अंतर रहता है. ऐसे में आठवें वेतन आयोग का गठन जरूरी हो गया था. सातवें वेतन आयोग का गठन पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में 28 फरवरी 2014 को किया गया था. सातवें वेतन आयोग ने अपनी सिफारिशें उसके करीब डेढ़ साल बाद नवंबर 2015 में केंद्र सरकार को सौंप दी थी. उसके बाद 1 जनवरी 2016 से 7वें वेतन आयोग की सिफारिशें लागू हो गईं, जो अभी तक लागू हैं.इस घोषणा से कर्मचारियों और सेवानिवृत्त लोगों में आशा की किरण जगी है।

### एक करोड़ से अधिक कर्मचारियों और पेंशनधारकों को मिलेगा 8वें वेतन आयोग का लाभ

सरकार के इस कदम का इंतजार एक करोड़ से अधिक केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को था। ये अपने मूल वेतन, भत्ते, पेंशन और अन्य लाभों को संशोधित करने में मदद के लिए आयोग के गठन की आस लगाए थे। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा करते हुए कहा कि आयोग का गठन 2026 तक हो जाएगा। उन्होंने आगे दोहराया कि सातवें वेतन आयोग की सिफारिशें पहले ही लागू की जा चुकी हैं। सरकार बाद में सदस्यों सहित आयोग के अन्य विवरणों के बारे में जानकारी देगी। सातवें वेतन आयोग ने केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतन ढांचे, भत्तों और पेंशन में महत्वपूर्ण बदलाव किए है।

बीजेपी का कांग्रेस नेता पर बड़ा हमला

# अर्बन नक्सल्स के चंगुल में हैं राहुल गांधी- प्रसाद

**नई दिल्ली।** भाजपा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी शहरी नक्सलियों की सोच प्रक्रिया की पूरी तरह से पकड़ में हैं, और पूछा कि क्या उन्हें अब हिंडनबर्ग रिसर्च की बंद दुकान का अनुबंध मिल गया है। भाजपा नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने भी गांधी की उनकी टिप्पणियों के लिए आलोचना की कि कांग्रेस अब भाजपा, आरएसएस और भारतीय राज्य से लड़ रही ह, और कहा कि भारतीय राज्य एक स्वतंत्र देश के रूप में भारत की संवैधानिक पहचान का प्रतिनिधित्व करता है। रविशंकर प्रसाद ने कहा कि राहुल

गांधी कल बोले कि राहुल गांधी जी आप संसद में विपक्ष के नेता हैं और आप भारतीय राज्य से लड़ने की बात कर रहे हैं! भारतीय राज्य भारत के संवैधानिक व्यक्तित्व का परिचय है। राहुल गांधी को बोलने से पहले समझना चाहिए कि वो क्या बोल रहे हैं।

प्रयागराज में 45 दिवसीय महाकुंभ 2025 के तीसरे दिन भगवान शिव की पोशाक पहने एक साधु गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम त्रिवेणी संगम पर प्रदर्शन करते हुए।

परवेश वर्मा का दावा

# केजरीवाल के झूठ से तंग आ चुकी जनता..

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी नेता परवेश वर्मा ने गुरुवार को 5 फरवरी के दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले जूते और साड़ियों सहित पैसे और सामान बांटने के आरोपों को खारिज कर दिया। वर्मा ने दावा किया कि ये आरोप आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल द्वारा झेली गई हार के डर से लगाए गए हैं। वर्मा ने बताया कि भाजपा दिल्ली में सरकार बनाने जा रही है क्योंकि लोग केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी (आप) के झूठ और विफलताओं से तंग आ चुके हैं। आप ने वर्मा पर नई

दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में महिलाओं को जूते, साड़ी और कंबल के अलावा 1,100 रुपये बांटने का आरोप लगाया है, जहां भाजपा नेता केजरीवाल के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं।

# बृहन महाराष्ट्र मंडल का अ.भा. अधिवेशन संपन्न

**रायपुर (समय दर्शन)।** बृहन्महाराष्ट्र मंडल का 73 वां अ.भा. अधिवेशन विगत 10 से 12 जनवरी को चौबे कालोनी रायपुर स्थित महाराष्ट्र मंडल भवन में सम्पन्न हुआ जिसमें संपूर्ण भारतवर्ष एवं विदेशों से आए प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अधिवेशन में छत्तीसगढ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सहित रायपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सभी विधायक विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर नई दिल्ली से पधारे बृहन्महाराष्ट्र मंडल नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलिंद महाजन एवं प्रधान कार्यवाह दिलीप कुंभोजकर सम्मिलत हुए। महाराष्ट्र मंडल रायपुर के अध्यक्ष अजय काळे, बृहन्महाराष्ट्र मंडल नई दिल्ली के उपाध्यक्ष शेखर रावसाहेब अमीन एवं आयोजन

संयोजक श्री सुबोध टोळेश्के मार्गदर्शन में आयोजित इस सफल कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने समाज के पुरोधाओं को नमन करते हुए अपने उद्बोधन में महाराष्ट्र और छत्तीसगढ के आत्मीय जुडाव एवं सांस्कृतिक संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि नागपूर पूर्व में सी.पी. बेरार की राजधानी थी एवं छत्तीसगढ उसमें समाहित था। उन्होंने कहा कि मराठी समुदाय छत्तीसगढ में दूध में शक्कर की तरह घुलमिलकर रहने वाला समुदाय है। इस अवसर पर उन्होंने महाराष्ट्र मंडल रायपुर के सामाजिक समरसता के कार्यों की सराहना करते हुए रू.10 लाख सहयोग की घोषणा की। कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने छ.ग.अंचल के वरिष्ठ सितार वादक श्री सुधाकर शिशवलीकर एवं रंगकलाकर एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती रोहिणी राम पाटणकर जिन्होंने 4 दशकों से अधिक समय समाज में महिला एवं बालिकाओं का रोजगार मूलक प्रशिषक्षण देने का कार्य किया है को पुष्पगुच्छ, षाल, श्रीफल, मोमेन्टो एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर विशिष्ठ कार्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया। अधिवेशन में छ.ग. के विभिन्न महाराष्ट्र मंडलों के सदस्य एवं बडी संख्या में रायपुर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

संस्थानों पर कर लिया कब्जा

# केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही बीजेपी-भूपेश बघेल..

**रायपुर/ संवाददाता**

कांग्रेस ने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने भारतीय राज्य के खिलाफ लड़ने के बारे में राहुल गांधी की हालिया टिप्पणियों की गलत व्याख्या की और कहा कि गांधी राज्य की संवैधानिक परिभाषा का जिक्र कर रहे थे जैसा कि अनुच्छेद 12 में उल्लिखित है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) मुख्यालय में प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है

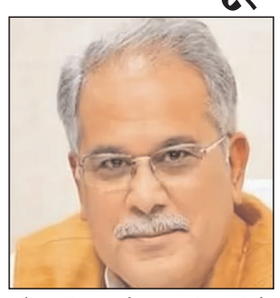

और संविधान के तहत 'राज्य' के रूप में परिभाषित संस्थानों पर कब्जा कर रही है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब बुधवार को दिल्ली में कांग्रेस के नए मुख्यालय के उद्घाटन के दौरान राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा पर देश में हर एक संस्थान पर कब्जा करने का आरोप लगाया। राहुल ने कहा कि आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के इस बयान का जिक्र करते हुए कि अयोध्या में राम मंदिर का अभिषेक भारत की सच्ची आजादी है। यह काफी प्रतीकात्मक है कि कल, एक भाषण में, आरएसएस प्रमुख ने कहा कि भारत ने 1947 में कभी आजादी हासिल नहीं की थी। उन्होंने दावा किया कि सच्ची आजादी तब मिलेगी जब राम मंदिर बनेगा। यह इमारत (कांग्रेस मुख्यालय) कोई साधारण इमारत नहीं है. यह हमारे देश की धरती से, लाखों लोगों की कड़ी मेहनत और बलिदान के परिणामस्वरूप उभरा है।

सुरक्षाबलों और नक्सलियों की मुठभेड

# 12 नक्सली मारे जाने की खबर....फायरिंग जारी.....

**बीजापुर/ एजेंसी**

बीजापुर जिले के उसूर ब्लॉक के पुजारी कांकेर व मारुड़बाका के जंगल में गुरुवार को सुरक्षाकर्मियों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। सूत्रों के मुताबिक, मुठभेड़ में सुरक्षाबल के जवानों ने 12 नक्सलियों को मार गिराया है। बीजापुर और तेलंगाना की सीमा पर तीन जिलों के नक्सलियों के खिलाफ जवान बड़ा ऑपरेशन चला रहे हैं। गुरुवार को सुरक्षाकर्मियों की एक संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। दक्षिण बीजापुर के जंगल में सुबह करीब नौ बजे गोलीबारी शुरू हो गई। अधिकारी ने कहा कि रुक-रुककर गोलीबारी अभी भी जारी है, आगे की जानकारी की प्रतीक्षा है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि तीन जिलों के जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) के कर्मी, सीआरपीएफ की विशिष्ट जंगल युद्ध इकाई कोबरा (कमांडो बटालियन फॉर रेजोल्यूट एक्शन) की पांच बटालियन और सीआरपीएफ (केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) की 229वीं बटालियन ऑपरेशन में शामिल हैं। 12 जनवरी को बीजापुर के मद्देड़ थाना क्षेत्र में सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में दो महिलाओं समेत पांच नक्सली मारे गये थे। पुलिस ने कहा था कि दो साल में छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों पर अपने सबसे बड़े हमले में नक्सलियों ने इस महीने की शुरुआत में बीजापुर जिले में 60 से 70 किलोग्राम वजन वाले एक तात्कालिक विस्फोटक उपकरण का उपयोग करके एक वाहन को उड़ा दिया, जिसमें आठ सुरक्षाकर्मी और उनके नागरिक चालक की मौत हो गई। उल्लेखनीय है कि, बीते दिनों नेशनल पार्क

क्षेत्र के जंगलों में नक्सलियों के होने का पता चला था। सूचना मिलने के बाद सुरक्षाबल टीम ने सर्च ऑपरेशन के लिए भेजा गया। सर्च ऑपरेशन के दौरान रविवार सुबह सुरक्षाबलों और नक्सलियों की बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में तीन नक्सलियों को ढेर कर दिया गया था। सूत्रों के अनुसार सुरक्षाबलों ने इलाके की घेराबंदी कर दी है और नक्सलियों को पकड़ने के लिए हर संभव कोशिश की जा रही है। इस मुठभेड़ में अब तक 12 नक्सलियों के मारे जाने की खबर सामने आ रही है। हालांकि अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। यह संख्या बढ़ भी सकती है। सुरक्षाबलों को इस ऑपरेशन में बड़ी सफलता मिलने की उम्मीद है। मुठभेड़ स्थल से जवानों ने स्क्रजवानों और कई हथियार बरामद किए हैं। बता दें कि गुरुवार को इसी इलाके में एक और घटना हुई थी। नक्सलियों द्वारा लगाए गए आईईडी में विस्फोट में सीआरपीएफ की कोबरा इकाई के दो कमांडो घायल हो गए थे। बताया जा रहा है कि सीआरपीएफ की 229वीं बटालियन और कोबरा की 206वीं बटालियन के जवान शामिल थे। जवान अनजाने में आईईडी के संपर्क में आ गए, जिससे विस्फोट हो गया। घायल जवानो कों हेलीकाप्टर से रायपुर रेफर किया गया। अभियान में राज्य पुलिस के तीन जिलों के जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी), कोबरा की 5 बटालियन (सीआरपीएफ की एक विशिष्ट जंगल युद्ध इकाई - कमांडो बटालियन फॉर रेसोल्यूट एक्शन) और सीआरपीएफ की 229वीं बटालियन के जवान शामिल हैं

### नए साल 2025 में दूसरी बड़ी मुठभेड़ हुई.....

नए साल पर नक्सलियों के खिलाफ जवान नई रणनीति के साथ एक्शन ले रहे हैं. 12 जनवरी को बीजापुर में 5 माओवादी मारे गए थे. वहीं 6 जनवरी को बीजापुर के कुटरु में नक्सलियों के लगाए बम की चपेट में आने डीआरजी के 8 जवान शहीद हो गए थे. पिछले साल 2024 में राज्य में अलग-अलग मुठभेड़ों में सुरक्षा बलों ने 219 नक्सलियों को मार गिराया था. नक्सलियों की तलाश में इलाके में सघन सर्चिंग अभियान चलाया गया है. पुलिस अधिकारियों के मुताबिक सुरक्षा बलों को किसी भी तरह का कोई नुकसान मुठभेड़ में नहीं हुआ है. पुलिस अधिकारी की ओर से कहा गया है कि मुठभेड़ के बाद जब जवान लौटकर कैंप आएंगे तब पूरी जानकारी मीडिया को दी जाएगी.

## संक्षिप्त समाचार

### भाजपा के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष कोमल सिंह राजपूत से कायस्थ समाज के प्रतिनिधि मंडल ने की भेंट



**राजनांदगांव।** भारतीय जनता पार्टी के ननवनियुक्त जिलाध्यक्ष कोमल सिंह राजपूत से उनके निवास कार्यालय में कायस्थ समाज राजनांदगांव के प्रतिनिधिमंडल ने सौजन्य मुलाकात की। सर्वप्रथम कोमल सिंह राजपूत को जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर कायस्थ समाज के सदस्यों ने बधाई प्रेषित करते हुए गुलदस्ता भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कोमल सिंह राजपूत ने कहा कि कायस्थ समाज के सभी परिवार एवं सदस्यों से मेरे मधुर संबंध रहें हैं, कायस्थ समाज से सदैव मुझे स्नेह, आशीर्वाद व सहयोग प्राप्त हुआ हैं। इस अभूतपूर्व सम्मान लिए उन्होंने कायस्थ समाज के प्रतिनिधि मंडल का आभार जताया। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में कायस्थ समाज की यथासंभव अवश्य मदद करेंगे। इस अवसर पर कायस्थ समाज राजनांदगांव की ओर से वरिष्ठ संरक्षक सुरेंद्र श्रीवास्तव, वरिष्ठ संरक्षक रोहणीकांत श्रीवास्तव, अध्यक्ष ओमप्रकाश श्रीवास्तव, राजेश श्रीवास्तव, आदेश श्रीवास्तव, संजय श्रीवास्तव, गणेश लाल श्रीवास्तव, अभिनय श्रीवास्तव, डॉ. रत्नेश श्रीवास्तव, अतुल श्रीवास्तव, आशीष वर्मा सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

### विभिन्न मांगों को पूरा कराने 17 को ज्ञापन सौंपेगा तृतीय वर्ग कर्मचारी संगठन



**राजनांदगांव।** छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ (पंजीयन क्रमांक 249) जिला शाखा के द्वारा 17 जनवरी को कर्मचारी साथियों की मांगों के समाधान को लेकर मुख्यमंत्री व मुख्य सचिव के नाम एक ज्ञापन जिलाधीश को सौंपा जावेगा। संघ के संरक्षक पीआर यादव के मार्गदर्शन व प्रांतीय अध्यक्ष जीआर चंद्रा के निर्देशानुसार, प्रादेशिक स्तर पर ज्ञापन सौंपे जाने के क्रम में केंद्र सरकार द्वारा जारी आदेश दिनांक से 3 प्रतिशत की वृद्धि कर 53 प्रतिशत महंगाई भत्ता दिए जाने, 240 दिवस की जगह 300 दिवस का अवकाश नकदीकरण की पात्रता करने, लिपिक-शिक्षक सहित विभिन्न संवर्गों की वेतन-विसंगति को दूर करने हेतु गठित समिति का प्रतिवेदन सार्वजनिक किए जाने, सभी संवर्गों के अधिकारी-कर्मचारियों को सेवाकाल में चार स्तरीय वेतनमान संबंधी आदेश शीघ्र जारी किए जाने, सभी संवर्गों की लंबित पदोन्नति प्रक्रिया पूर्ण करने हेतु निर्देश जारी किए जाने, संविदा, दैनिक वेतनभोगी, अनियमित कर्मचारियों को रिक्त पदों पर नियमित करने तथा मध्यप्रदेश की भांति सेवा सुरक्षा सुनिश्चित किए जाने, शासन द्वारा श्रम सम्मान निधि का भुगतान आदेश पुन: सभी विभागों को प्रदाय करने हेतु निर्देशित किए जाने, अनुकंपा से नियुक्ति प्राप्त लिपिकों हेतु कार्यालय प्रमुख-विभागाध्यक्ष एवं अन्य तकनीकी संस्थाएं को कौशल परीक्षा हेतु अधिकृत किए जाने, सभी विभागों के आकस्मिक निधि से नियमित सेवानिवृत्त कर्मचारी को अवकाश नकदीकरण दिए जाने संबंधी आदेश सामान्य प्रशासन विभाग से जारी किए जाने, अनुकंपा नौकरी हेतु स्वीकृत पद का 10 प्रतिशत का नियम पुन: एक बार शिथिल किए जाने आदि मांगों को लेकर संघ के महामंत्री विजय लहरे, संभागीय अध्यक्ष आनन्दकुमार श्रीवास्तव व जिला अध्यक्ष अरूण कुमार देवांगन के नेतृत्व में मध्याह्न भोजनावकाश के मध्य ज्ञापन सौंपा जावेगा। संघ समस्त कर्मचारी साथियों से उपस्थिति हेतु अनुरोध करता है।

### प्रधानमंत्री आवास योजना फेस 2,:रैपिंड असेसमेंट पात्र हितग्राहियों का आज से 60 वार्डो में करेगी अधिकारी/कर्मचारी डोर टू डोर सर्वे

**दुर्ग।** नगर पालिक निगम क्षेत्र में प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 के अंतर्गत रैपिड असेसमेंट सर्वे शुरू किया जा रहा है। इस योजना के तहत 16 जनवरी से नगर निगम क्षेत्र के 60 वार्डों में घर घर जाकर जहां नागरिकों को योजना से लाभ,आवेदन प्रक्रिया और अन्य जानकारी दी जाएगी।जिला कलेक्टर / निगम प्रशासक सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी के निर्देश एवं कमिश्नर सुमित अग्रवाल के मार्गदर्शन में अधिकारियों और कर्मचारियों को विभिन्न वार्डों में ड्यूटी पर लगाया गया है। शिविर का आयोजन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक होगा। कमिश्नर सुमित अग्रवाल एवं प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के नोडल अधिकारी दिनेश नेताम के द्वारा निर्देशित जिसे पूर्व में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) का लाभ नहीं मिला है।

# शिवरतन शर्मा के जन्मदिन के उपलक्ष में माखन महिलांगे के नेतृत्व में 200 युवाओं ने किया भाजपा प्रवेश

**शत्रुघ्न लाल**

**भाटापारा।** शिवरतन शर्मा भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष की जन्मदिन के उपलक्ष में अनुसूचित जाति मोर्चा जिला उपाध्यक्ष माखन महिलांगे के नेतृत्व में जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक - 04 से बड़ी संख्या में 200 युवा साथी को भाजपा प्रवेश कराया गया।

जिसमें मुख्य रूप से अनुसूचित जाति /जनजाति छात्र संगठन जिला बलौदा बाजार भाटापारा के जिला अध्यक्ष अमित बंजारे ग्राम पौसरी से अपने पूरे टीम के साथ भाजपा प्रवेश किया।

जनपद सदस्य सभापति पाली बाई अनिल दिवाकर , पूर्व सरपंच बोरसी (ब) अनिल दिवाकर अपने समर्थकों के साथ भाजपा प्रवेश किया। साथ ही साथ जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक- 04 से मखन महिलांगे दावेदारी पेस भारतीय जनता पार्टी से किया उस क्षेत्र से सतनामी समाज के युवा साथी को भाजपा प्रवेश कराए हैं जिसमें मुख्य रूप से ग्राम पंचायत सिनौधा से निरंजन भारती 30 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत मजगांव से प्रदीप बांधे 35 युवा साथी के साथ

ग्राम पंचायत डिग्गी से नरेंद्र जोगी 20 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत बिलाईडबरी से विक्की 20 साथी के साथ ग्राम पंचायत गड़ाडीह से नरेंद्र 10 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत जरौद से ओंकार टंडन 10 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत गोरदी से विनय बंजारे 20 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत फरहदा से नवीन 10 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत मटिया से किशोर 05 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत भंवरगढ़ से अमर कुर्रे 10 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत पेंडारी से संजय 05 युवा साथी के साथ ग्राम पंचायत खोखली से तुषार सतनामी 10 युवा साथी के साथ एवं भाटापारा के सतनामी समाज के युवा साथी पूर्ण समर्थन के साथ मखन महिलांगे के नेतृत्व में शिवरतन शर्मा भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष के जन्मदिन के उपहार स्वरूप 200 युवा साथी को भाजपा प्रवेश कराकर भेंट किया गया । जिसमें सतनामी समाज के ब्लॉक अध्यक्ष ओमप्रकाश रात्रे जी, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष मोहन बांधे जी, कुंज राम कोसले ,बंटी टंडन, ओम जांगड़े ,लक्ष्मण टंडन ,रामकुमार रात्रे ,प्रदीप बंजारे, रुप सिंह ,गोवर्धन डहरिया ,हेमराज बांधे ,प्रदीप आनंद, योगेश अनंत, रोशन बंजारे एवं निम्न साथी गण उपस्थित रहे।

# कलेक्टर ने श्रम विभाग कार्यालय का किया निरीक्षण

**पंजी संधारण करने तथा नियमों व प्रक्रियाओं से अद्यतन रहने दिए निर्देश**

**मुंगेली(समय दर्शन)** कलेक्टर राहुल देव ने आज जिला कलेक्टोरेट स्थित श्रम विभाग के कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यालय में कैश बुक, कर्मचारी उपस्थिति पंजी सहित विभिन्न पंजियों का अवलोकन किया तथा श्रम विभाग अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं, श्रम प्रवर्तन से संबंधित नियमों एवं प्रक्रियाओं के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने श्रम पदाधिकारी को विभाग से संबंधित विभिन्न योजनाओं, नियमों एवं प्रक्रियाओं न्यूनतम वेतन अधिनियम, बोनस भुगतान अधिनियम, मातृत्व हित लाभ आदि के संबंध में जानकारी ली और अद्यतन रहने निर्देशित किया। उन्होंने श्रम विभाग से संबंधित हितग्राहियों को योजना का लाभ लेने के लिए आवश्यक दस्तावेजों के संबंध में भी जानकारी ली तथा शिविर एवं योजनाओं के प्रचार-प्रसार के जरिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को लाभान्वित करने के लिए निर्देशित किया। इस दौरान संबंधित अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

# राज्य स्तरीय युवा उत्सव में युवाओं ने बढ़ाया जिले क़ा मान

**उप मुख्यमंत्री एवं खेलकूद मंत्री के हाथों हुए सम्मानित**

**कलेक्टर ने विजेता युवाओं को दी बधाई**

**रायपुर।** राज्य स्तरीय युवा उत्सव का आयोजन 12 से 14 जनवरी 2025 को रायपुर के सांइस कॉलेज मैदान एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में किया गया । राज्य स्तरीय युवा उत्सव में जिला के नार्यन सेन,

गौतम मिरि एवं परिवेश कन्नौजे विज्ञान मेला ( सामूहिक) में द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं प्राची पटेल, आदित्य साहू, तुकेश साहू, सुनील साहू एवं प्रदीप कुमार सेन ने कृषि उत्पाद में तृतीय स्थान प्राप्त कर जिले को गौरवान्वित किया है।उप मुख्यमंत्री अरुण साव एवं खेलकूद मंत्री टंकराम वर्मा ने इन प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। कलेक्टर दीपक सोनी एवं सीईओ जिला पंचायत दिव्या अग्रवाल ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई व शुभकामनाएं दी है। वरिष्ठ खेल अधिकारी प्रीति बंछोर ने बताया कि राज्य स्तरीय आयोजन में जिला बलौदाबाजार-भाटापारा से कुल 60 सदस्यीय दल (प्रतिभागी/ऑफिसियल्स) ने भाग लिया। राज्य स्तरीय युवा उत्सव में एकल लोकनृत्य, दलीय लोकनृत्य, एकल लोकगीत, दलीय लोकगीत, कहानी लेखन, चित्रकला, तात्कालीक भाषण, कविता लेखन एकल विज्ञान मेला, समूह विज्ञान मेला, हस्तशिल्प एवं कृषि उत्पाद विधाएं सम्मिलित किया गया।

# छग की परंपरा,संस्कृति को जीवंत रखने युवा संगठन कृत संकल्पित है...अशोक साहू

**लोककला महोत्सव गातापार का हुआ शुभारंभ!**

**पाटन (समय दर्शन)।** युवा संगठन एवं ग्रामवासी गातापार के तत्वाधान में भव्य लोककला महोत्सव का आयोजन किया गया है। जिसके शुभारंभ मुख्य अतिथि अशोक साहू उपाध्यक्ष ज़िप दुर्ग थे, अध्यक्षता बी.आर.साहू सेवानिवृत डिप्टी कलेक्टर ने किया, विशेष अतिथि जशवंत सार्वा, जयंती साहू पूर्व सभापति जिप दुर्ग, भेष आठे जोन प्रभारी, तोमेश पिपरिया प्राचार्य,रेवाराम साहू (ष्टद्बस्न), रेवा मंडल, होरीलाल साहू सरपंच,डा डागेश्वर साहू,राजेश्वर गंजीर उपसरपंच ने दीप प्रज्वलित कर सियाराम जी,हनुमान जी, छग़ महतारी की पूजा अर्चना ग्रामवासी एवं क्षेत्रवासियों की सुख, समृद्धि, शांति, खुशहाली की कामना किए। जिप उपाध्यक्ष अशोक साहू ने युवाओं के प्रेरणाश्रोत स्वामी विवेकानंद जी को नमन करते हुए युवाओं को उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो।युवा देश का भविष्य होते है,आप सभी ऐसे कार्य करें जिससे आप सभी का नाम,कृति,यश की प्राप्ति हो।गातापार के युवा संगठन लगातार लोककला महोत्सव,स्वच्छता अभियान, नशा मुक्ति अभियान सहित विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते आ रहे है आप सभी को बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। श्री साहू ने आगे बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने युवा, महिला, किसान सहित सभी वर्गों के हित के लिए निरंतर कार्य किया।आज भी हम जिप विकास निधि सहित विभिन्न अधोसंरचना के विकास कार्यों का लोकार्पण कर रहे हैं।आप सभी को बधाई एवं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते है। इस अवसर भीरेंद्र साहू,नरेंद्र साहू,विमल साहू,अरुण साहू, गजेंद्र साहू,अश्वनी साहू, नोमेष साहू, कार्तिक साहू,पी एल साहू,जी एल साहू, हिंछा राम साहू, कोमल साहू, चैनसिग़ विश्वकर्मा, टेशराम साहू, नूतन साहू, टीकाराम साहू, लाभेश यादव, ख़ेमन साहू,गोलू साहू, सुनील साहू, हरीश साहू, वेदु, नीरज, भीषम, गिरीश, प्रदीप, चंचल, झामिनी, लोकेश्वरी, टेमिन, साधना, पंकज, शेखर, खिलेंद्र, ज्योति, चेतना, मेघा,मोनिका, कल्याणी साहू युवा संगठन सहित आसपास के ग्रामीणजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

### जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक आज

**ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़।** धमतरी / राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत कोटपा से संबंधित गतिविधियों के निर्धारण एवं क्रियान्वयन हेतु जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक 17 जनवरी को आहूत की गई है। कलेक्टोरेट सभाकक्ष में शाम 4.30 बजे से आयोजित इस बैठक में संबधित अधिकारियों को उपस्थित होने के निर्देश कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी ने दिए हैं।

# कृष्णा यादव का सपना हुआ साकार, परिवार के साथ पहुँचे खुद के आवास पर, खुशी के कारण आंखों में आए आंसू




**दुर्ग (समय दर्शन)।** दुर्ग नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत बैगापारा निवासी कृष्णा यादव पिता सीताराम यादव उम्र 53 वर्ष की खुशी का ठिकाना नही रहा।पूरा हो चुके खुद के पीएम आवास में उन्होंने पूरे परिवार के साथ कदम रखा तो खुशी के कारण आंखों में आंसू आने लगे।उन्होंने बताया कि जिंदगी भर कवेलू के मकान में रहें है। कृष्णा यादव ने प्रधानमंत्री आवास के तहत अपना खुद का पक्का सुंदर आशियाना बनवा लिया।

गरीबी और शरीर की लाचारी से तंग आकर मैं हिम्मत हार चुका था, मेरा एक पैर पूरी तरह से शून्य है. ऐसी तंगी हालत में कच्चे मकान में रहना बहुत ही दुखद प्रतीत होता था,शरीर की लाचारी, पैसे की तंगी, परिवार की जिम्मेदारी, भाई की मजदूरी ऊपर से कच्चा मकान बारिश की दिनों में रहना दूर्लभ हो गया था। छानी वाला खप्पर का मकान होने की वजह से हर साल रिपेयरिंग करवाने का झंझट के लिए अपनी लाचारी एवं मज़बूरी पर आंसू बहाया करता था। खप्पर वाले मकान में बारिश के दिनों में पानी टपकता रहता था इस स्थिति में परिवार के साथ में रहना मज़बूरी थी, हमेशा अपनी किस्मत को कोसता था।

मोहल्ले के दोस्तों से इस बात की जानकारी मिली कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान बनाया जा सकता है। तब वार्ड के पार्षद से मुलाकात कर जानकारी लिया कि किस तरह से प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान बनवाया जा सकता है। नगर निगम कार्यालय पहुंचा तो वहां के अधिकारियां ने सारे दस्तावेज एवं आवश्यक कार्रवाई के बारे में जानकारी दिया।

जैसे-जैसे मुझे बताया गया मैं उसे सारे दस्तावेज भरकर दे दिया। निगम के अधिकारियों ने मेरे घर का निरीक्षण किया तथा समय-समय पर मुझे मार्गदर्शन करते रहे। प्रधानमंत्री आवास की सूची में नाम आने के साथ राशि मेरे खाते में आना शुरू हो गया और मकान बनना प्रारंभ हो गया। इस तरह से मेरा मकान बनकर तैयार हो गया। मैं कभी सपने में नहीं सोचा था कि मेरा पक्का मकान होगा जो मेरे मॉ-बाप, दादा नहीं बनवा सके उसे आज सरकार ने बनवा दिया। मैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी का बहुत-बहुत शुक्रगुजार हूं जिनके सहयोग से मुझे एक पक्का ओर सुंदर मकान मिल गया।

# कमला कालेज में पीएम-उषा के अंतर्गत वर्कशॉप का आयोजन

**राजनांदगांव (समय दर्शन)।** शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव में आईक्यूएसी एवं महिला प्रकोष्ठ के द्वारा आयोजित एवं पीएम-उषा के द्वारा प्रायोजित सॉफ्ट कम्पोनेन्ट के अतर्गत लैंगिक समानता पर सात दिवसीय कार्यशाल का आयोजन किया गया।




कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 07.01.2025 को मुख्य अतिथि डॉ. राजेश पाण्डेय अतिरिक्त संचालक, दुर्ग संभाग, अध्यक्षता सुश्री मणिभास्कर गुप्ता के द्वारा किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आलोक मिश्रा के मार्गदर्शन में उक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 08.01.2025 को सुश्री रीना ठाकुर प्रोजेक्ट ऑफ्सिर (महिला एवं बाल विकास अधिकारी) ने शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी। दिनांक 09.01.2025 को डॉ. (आयुर्वेद) मंजोत कौर गरचा ने भारत की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद की महत्त पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने बताया कि वे मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति का प्रचार-प्रसार कर रही है और बहुत से लोग इससे स्वास्थ्य लाभ ले रहे है। दिनांक 10.01.2025 को डॉ. साधना तिवारी (होमियो पैथिक) अपने वक्तव्य में स्वस्थ्य एवं महिला शिक्षा पर जोर दिया एवं सलाह दी कि छात्राएं अपने आप को स्वस्थ्य रखने के लिए पौष्टिक आहार एवं व्यायाम अति आवश्यक है। दिनांक 11.01.2025 को पुलिस विभाग द्वारा महिलाओं की सुरक्षा, आत्मरक्षा एवं साइबर सुरक्षा के बारे में बताया। साथ ही पुलिस विभाग द्वारा अभिव्यक्ति ऐप की जानकारी दी, ताकि किसी भी तरह के मुसीबत में तत्काल पुलिस की सुरक्षा प्राप्त हो सके। दिनांक 14.01.2025 को श्रीमती सुषमा सिंह अध्यक्ष राजपूत महिला कल्याण समिति, राजनांदगांव ने लैंगिक हिस्सेदारी एवं लैंगिक समानता के अंतर को समझाया। साथ ही बताया कि शिक्षा के द्वारा ही हम पुरूष प्रधान समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकते है।

दिनांक 15.01.2025 को सात दिवसीय कार्यशाला के समापन समारोह के मुख्य वक्ता श्रीमती कुसुम दुबे (अधिवक्ता) ने कानूनी अधिकार और जागरूकता के बारे में छात्राओं को बतलाया एवं साथ ही महिलाओं के अधिकार एवं सुरक्षा के लिए विभिन्न धाराओं की जानकारी दी जैसे महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर होने वाले उत्पीड़न आदि के संबंध में छात्राओं को जागरूक किया। कार्यशाला में कुल 100 छात्राओं ने भाग लिया एवं अंतिम दिवस में मौखिक परीक्षा के माध्यम से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं कों मोमेन्टो देकर एवं बाकि सभा छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

उक्त कार्यक्रम के संचालक डॉ. एचके गरचा, समन्वयक डॉ. निवेदिता ए. लाल, डॉ. बृजबाला उइके, आयोजक सचिव डॉ. नीता एस. नायर एवं सहसचिव श्रीमती नीलम राम धनसाय थी। कार्यक्रम का सफ्ल संचालन डॉ. नीता एस. नायर द्वारा किया गया एवं डॉ. एचके गरचा द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया एवं सभी वक्ताओं का परिचय दिया गया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. निवेदिता ए. लाल द्वारा मंचस्थ सभी सम्मानीय अतिथियों, समिति के सभी सदस्यों डॉ. बसंत कुमार सोनबेर, आलोक जोशी एवं सभी प्राध्यापकों तथा कार्यालयीन स्टाफ जावेद सिद्दीकी, रमन साहू, धनेश पटेल एवं सभी छात्राओं का कार्यक्रम में उपस्थित होकर उसे सफ्ल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

सार समाचार

## हीरोइन के साथ एक गिरफ्तार

**रायपुर( समय दर्शन )।** थाना कबीर नगर क्षेत्रांतर्गत हीरापुर टेंगना तालाब के पास एक व्यक्ति को मादक पदार्थ हीरोइन (चिट्टा) के साथ पकड़ा गया है। आरोपी के कब्जे से कुल 4.10 ग्राम मादक पदार्थ हीरोइन (चिट्टा) जप्त किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 14.01.25 को थाना कबीर नगर पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि थाना कबीर नगर क्षेत्र अंतर्गत हीरापुर टेगना तालाब के पास 01 व्यक्ति अवैध रूप से मादक पदार्थ हीरोइन (चिट्टा) रखा है तथा बिक्री करने ग्राहक तलाश कर रहा है। जिस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पश्चिम दौलत राम पोर्ते एवं नगर पुलिस अधीक्षक आजाद चौक अमन कुमार झा (भा.पु.से.) द्वारा थाना प्रभारी कबीर नगर को सूचना की तस्दीक कर आरोपी को मादक पदार्थ हीरोइन के साथ रंगे हाथ पकडने निर्देशित किया गया। जिस पर वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन पर थाना प्रभारी कबीर नगर श्री दीपेश जायसवाल के नेतृत्व में थाना कबीर नगर की पुलिस टीम द्वारा उक्त स्थान पर जाकर मुखबिर के द्वारा बताए गये हुलिये के व्यक्ति को चिन्हांकित कर पकड़ा गया। पूछताछ में उक्त व्यक्ति ने अपना नाम धरम सिंग उर्फधरमा निवासी वीर सावरकर नगर हीरापुर रायपुर का होना बताया। टीम के सदस्यों द्वारा उसकी तलाशी लेने पर पेंट की जेब में प्लास्टिक की पन्नी में बंधी हुई पुड़िया को लपेटकर छुपा कर रखा था जिसे पूछने पर मादक पदार्थ हीरोइन (चिट्टा) होना बताया। जिस पर टीम के सदस्यों द्वारा आरोपी धरम सिंग उर्फधरमा को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 4.10 ग्राम मादक पदार्थ हीरोइन (चिट्टा), कीमत 40,000 रूपये जप्त कर आरोपी के विरूद्ध थाना कबीर नगर में धारा 21 नारकोटिक एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर कार्यवाही किया गया।

## अज्ञात बदमाशों ने दो कार को किया आग के हवाले

**रायपुर( समय दर्शन )।** राजा बाड़ा पंडरी में खड़ी दो कार को अज्ञात बदमाशों ने आग के हवाले कर दिया। जिससे लाखों रुपए का नुकसान हुआ है। प्रार्थी की शिकायत पर सिविल लाइन पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी नफीस कुरैशी राजा बाड़ी पंडरी का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि अज्ञात बदमाशों ने उसके घर के बाहर खड़ी टाटा हेरियर और वर्ना कार को आग के हवाले कर दिया। जिससे प्रार्थी को 10 लाख का नुकसान हुआ है। प्रार्थी की शिकायत पर सिविल लाइन पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

आदिम जाति विकास मंत्री ने सड्डू के प्रयास विद्यालय में कम्प्यूटर लैब का किया उद्घाटन

# एकाग्रता के साथ कठिन परिश्रम से मिलती है मंजिल : मंत्री श्री रामविचार नेताम

**रायपुर( समय दर्शन )।** आदिम जाति विकास मंत्री श्री रामविचार नेताम ने कहा कि एकाग्रता के साथ कठिन परिश्रम से मंजिल को हासिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सभी के साथ अपने बच्चे के बेहतर भविष्य के निर्माण का सपना जुड़ा होता है। विद्यार्थियों को भी अपने माता-पिता तथा रिश्ते-नातेदारों के सपने को साकार करने के लिए एकाग्र मन से अर्जुन की भांति केवल चिड़िया के नेत्र को केन्द्र में रखते हुए अपने लक्ष्य को भेदने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रयास में राज्य सरकार भी हर संभव सहयोग प्रदान कर रही है। उक्त बातें आज राजधानी रायपुर के सड्डू स्थित प्रयास आवासीय विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में कही। उन्होंने आज लगभग 34 लाख रूपए की लागत से निर्मित 40 सीटर आधुनिक कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मंत्री श्री नेताम ने नववर्ष की सौगात के रूप में वहां अध्ययनरत विद्यार्थियों को इंग्लिश डिक्शनरी प्रदान की और बच्चों से चर्चा का उनकी पढ़ाई-लिखाई के बारे में जानकारी ली। मंत्री श्री नेताम ने कहा कि पढ़ाई का उद्देश्य सिर्फ नौकरी नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा लेकर औरों को भी रोजगार देने की होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज आवासीय विद्यालयों में सरकार शैक्षणिक वातावरण के साथ-साथ बेहतर सुविधाएं प्रदान कर रही है। यहां रहने वाले विद्यार्थी हजारों बच्चों में चयन करके शिक्षा के लिए यहां लाया जाता है। विद्यार्थियों को भी अपने मंजिल को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना चाहिए। कार्यक्रम को रायपुर ग्रामीण के विधायक श्री मोतीलाल साहू ने भी सम्बोधित किया। गौरतलब है कि राज्य सरकार अनुसूचित क्षेत्र एवं गैर अनुसूचित क्षेत्र के कमजोर वर्गों के बच्चों के साथ-साथ माओवादी पीड़ित बच्चों को बेहतर शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छे वातावरण उपलब्ध कराने प्रयास आवासीय विद्यालय संचालित कर रही है। राजधानी रायपुर के सड्डू स्थित प्रयास आवासीय विद्यालय में 884 विद्यार्थी अध्ययनरत है।

## शहरी स्लम बस्तियां अब विकसित कॉलोनी का ले रही आकार

**रायपुर( समय दर्शन )।** केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) से स्लम बस्तियां अब विकसित कॉलोनी का रूप ले रही हैं। अम्बिकापुर के खालपारा एवं झंझटपारा को स्लम बस्तियों को एक नया स्वरूप मिला है। पहले जहां झुग्गी झोपड़ियां और कच्चे मकान थे, वहां अब पक्की छत वाले मकान बन गए हैं। यह योजना गरीब परिवारों के लिए वरदान साबित हो रही है, जो पहले कच्च मकानों में रहते थे और बारिश के दिनों में बहुत परेशानी का सामना करते थे। वे अब सारी परेशानियों से दूर अब पक्के मकानों में निवासरत् है। इस योजना के तहत खालपारा और झंझटपारा के स्लम बस्तियों में 112 आवास स्वीकृत हुए थे, जिसमें से 95 आवास बनकर पूर्ण हो चुके हैं और शेष 17 आवास निर्माणाधीन हैं। लाभान्वित हितग्राहियों ने बताया कि यह योजना उनके लिए बहुत मददगार साबित हुई है, क्योंकि वे पहले पक्का मकान बनाने में असमर्थ थे। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) का मुख्य उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में गरीब परिवारों को पक्के मकान प्रदान करना है। यह योजना 2015 में शुरू की गई थी और इसके तहत सभी पात्र शहरी परिवारों को पक्के घर प्रदान करना है। यह योजना महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देती है, क्योंकि पक्के मकानों का स्वामित्व महिला सदस्य के नाम पर या संयुक्त नाम से किया जा सकता है। गौरतलब है कि केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) एक महत्वाकांक्षी योजना है, जो शहरी क्षेत्रों में गरीब परिवारों को पक्के मकान प्रदान करने के लिए शुरू की गई है। यह योजना न केवल लाभान्वित परिवारों को सुरक्षित और स्वस्थ जीवन प्रदान करती है, बल्कि यह महिला सशक्तीकरण को भी बढ़ावा देती है। इस योजना के तहत लाभान्वित परिवारों को कई सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, जिनमें शामिल हैं। लाभान्वित परिवारों को पक्के मकान प्रदान किए जाते हैं, जो उन्हें सुरक्षित और स्वस्थ जीवन प्रदान करते हैं। पक्के मकानों में बुनियादी सुविधाएं जैसे कि शौचालय, पानी की आपूर्ति, बिजली और रसोईघर प्रदान किए जाते हैं। लाभान्वित परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है, जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके।

# मैनपुर के दुर्गम वनांचल डुमरपड़ाव से जागड़ा तक पक्की सड़क का निर्माण शुरू

### ग्रामीणों ने जताया मुख्यमंत्री साय का आभार

**रायपुर( समय दर्शन )।** मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व और संवेदनशीलता के चलते गरियाबंद जिले के मैनपुर विकासखंड के नक्सल प्रभावित दुर्गम वनांचल क्षेत्रों में पक्की सड़क निर्माण का कार्य शुरू हो चुका है। नेशनल हाईवे 130सी के डुमरपड़ाव से जागड़ा तक 4.7 किमी लंबी सड़क के निर्माण के लिए 3.02 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई है। दशकों से सड़क की मांग कर रहे ग्रामीणों ने इस ऐतिहासिक पहल के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार जताया है। ग्रामीणों का कहना है कि आजादी के 75 वर्षों बाद यह पहली बार है जब उनकी सड़क निर्माण की मांग पर गंभीरता से ध्यान दिया गया है। क्षेत्र के दर्जनभर गांवों के हजारों लोग इस सड़क के अभाव में आवागमन और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित थे। अब इस सड़क के निर्माण से उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव की उम्मीद जगी है। ग्राम पंचायत जागड़ा के सरपंच मिथुला बाई नेताम, उपसरपंच भानु प्रताप सिन्हा और अन्य ग्रामीणों ने कहा कि मुख्यमंत्री ने उनकी वर्षों पुरानी मांग को पूरा करके एक बड़ा उपकार किया है। ग्रामीणों ने कहा, हमने कई बार प्रदर्शन और ज्ञापन के माध्यम से अपनी बात रखी थी, लेकिन पहली बार मुख्यमंत्री जी ने हमारी समस्या को समझते हुए इसे हल किया है।

# सुबह-सुबह ऑफिस पहुंचे कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह , कर्मचारियों की ली अटेंडन्स...

### समय पर ड्यूटी नहीं आने वालों की ली क्लास

**रायपुर( समय दर्शन )।** रायपुर के जिला कार्यालयों में समय सीमा को लेकर सख्ती शुरू हो गई है। इसी बीच कलेक?टर डॉ. गौरव सिंह ने सरकारी कार्यालयों का सुबह दौरा किया। इस दौरान कलेक?टर ने समय पर ड्यूटी नहीं आने वाले कर्मचारियों की क्लास लगा दी। साथ ही उन्होंने आफिस ग्राउंड में टेबल लगाकर कर्मचारियों की अटैंडन्स भी ली। इस दौरान कलेक्टर के साथ जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय पहुंचे थे। दरअसल, सरकारी दफ्तरों में काम करने वाले कर्मचारियों की लेट लतीफी के कारण काम प्रभावित होता है। जिसके कारण जनता को भी समस्या का सामना करना पड़ता है। इसी बीच रायपुर के कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह बुधवार सुबह पेंशनबाड़ा डीईओ ऑफिस चेकिंग करने पहुंचे। इस दौरान उन्होंने लेट पहुंचने वाले कर्मचारियों की क्लास लगा दी। वहीं आफिस में अनुपस्थित कर्मचारियों पर कार्रवाई के निर्देश भी दिए है। समय पर ऑफिस नहीं आने वालों पर कार्रवाई करने के दिए निर्देश औचक निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने ऑफिस के अटेंडेट रजिस्टर में एक-एक कर्मचारियों का नाम लेकर हाजरी ली। इस दौरान समय पर ऑफिस नहीं पहुंचने वालों का नाम नोट किया गया। साथ ही लापरवाही करने वाले कर्मचारियों को फटकार भी लगाई है।

## कवासी लखमा की गिरफ्तारी बदले की कार्यवाही : भूपेश बघेल

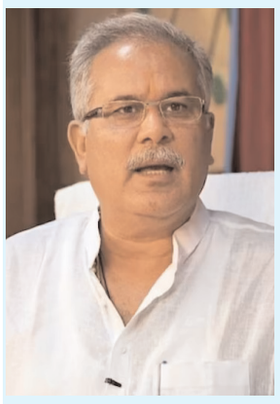

**रायपुर( समय दर्शन )।** छत्तीसगढ़ में 2 हजार करोड़ के शराब घोटाला मामले में पूर्व आबकारी मंत्री और वरिष्ठ विधायक कवासी लखमा की गिरफ्तार पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा सरकार पर हमला बोला है. बघेल ने ट्वीट कर कहा है कि बदले की भावना से कार्रवाई की गई है. केंद्र सरकार में बैठे अपने आकाओं के इशारे पर ईडी कांग्रेस नेताओं को बदनाम करने की साजिश रच रही है. पूरी कांग्रेस पार्टी कवासी लखमा के साथ खड़ी है.बता दें कि शराब घोटाला मामले में 28 दिसंबर को ईडी ने पूर्व मंत्री कवासी लखमा और उनके बेटे हरीश लखमा के ठिकानों पर छापेमार कार्रवाई की थी. छापेमार कार्रवाई में ईडी ने नगद लेनदेन के सबूत मिलने की जानकारी दी थी. इस मामले में आज तीसरी बार पूछताछ के बाद ईडी ने कवासी लखमा को गिरफ्तार किया है और उन्हें कोर्ट में पेश किया जा रहा है।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और नई दिल्ली विधानसभा से उम्मीदवार अरविंद केजरीवाल ने नई दिल्ली में रा%य विधानसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन पत्र दाखिल किया।

## सट्टा संचालित करते दो सटोरिये गिरफ्तार

**रायपुर( समय दर्शन )।** शहर के कोतवाली थानाक्षेत्र के गांधी नगर में सट्टा संचालन कर रहे दो सटोरियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है तथा उनके पास से 2300 रूपये नगद एवं सट्टा पट्टी पर्ची जप्त किया है। बता दें कि पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा रायपुर पुलिस के समस्त पुलिस राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों सहित प्रभारी एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट को जुआ एवं सट्टा पर पूर्णरूपेण अंकुश लगाने हेतु जुआ, सट्टा एवं ऑन लाईन सट्टा संचालित करने वालों की पतासाजी कर उन पर कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में दिनांक 14.01.25 को एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट की टीम को सूचना प्राप्त हुई कि थाना कोतवाली क्षेत्रांतर्गत गांधी नगर सुलभ के पास कुछ व्यक्तियों द्वारा सट्टा संचालित किया जा रहा है। जिस पर वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट तथा थाना कोतवाली पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा मुखबीर द्वारा बताये उक्त स्थान में जाकर रेड कार्यवाही किया गया। रेड कार्यवाही के दौरान सट्टा-पट्टी के माध्यम से सट्टा संचालित करते दो व्यक्तियों को पकड़ा गया, पूछताछ में व्यक्तियों ने अपना नाम अशोक जाल एवं जयसर तांडी निवासी कोतवाली रायपुर का होना बताया गया। जिस पर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से नगदी रकम 2300 रूपये एवं सट्टा पट्टी पर्ची जप्त कर आरोपियों के विरूद्ध थाना कोतवाली में छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 6 का अपराध पंजीबद्ध कर आरोपियों के विरूद्ध कार्यवाही किया गया।

# सौर ऊर्जा और ऑटोमेशन तकनीक से सिंचाई प्रबंधन में क्रांति

### छत्तीसगढ़ अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (क्रेडा) की अभिनव पहल

**रायपुर( समय दर्शन )।** मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में कृषि और किसानों को समृद्ध बनाने के लिए बहुतेरे प्रयास किए जा रहे हैं। खेती-किसानी को उन्नत करने के लिए किसानों को हर संभव मदद और आदान सहायता दी जा रही है, राज्य में कृषि उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हो और इसका लाभ किसानों को मिले। उनका जीवन स्तर ऊंचा उठे। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। कृषि को समृद्ध बनाने का मतलब छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करना है। कृषि के लिए सिंचाई सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान समय में सिंचाई क्षमता लगभग 39 प्रतिशत है। यही कारण है कि राज्य में वर्षा आधारित एक फसली खेती यहां होती है। कृषि के क्षेत्र में समृद्धि के लिए द्विफसली एवं त्रिफसली खेती जरूरी है। इसको ध्यान में रखकर छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा राज्य के ऐसे इलाकों में जहां नहरों के माध्यम से सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है। वहां सौर सुजला योजना एवं किसान समृद्धि योजना अथवा सामान्य नलकूप योजना के माध्यम से किसानों को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के लिए खेतों में नलकूप की स्थापना के लिए अनुदान सहायता दी जाती है। छत्तीसगढ़ राज्य में सौर सुजला योजना को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस योजना के तहत ऐसे इलाके जहां परम्परागत बिजली सुविधा नहीं है, वहां सौर सुजला के नलकूप से किसानों को सिंचाई के लिए सहजता से पानी मिल जाता है। सौर सुजला योजना ने किसानों को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने में बहुत मददगार साबित हो रही है। सौर सुजला योजना के पम्पों में ऑटोमेशन तकनीक के उपयोग ने इसको और उपयोगी बना दिया है। सिंचाई के लिए पम्प को चालू और बंद करने के लिए किसानों को अब खेत में जाकर पम्प चालू करने की जरूरत नहीं रही है। किसान अपने घर में ही या किसी दूसरे शहर में वह अपने मोबाईल के माध्यम से सौर सुजला के सिंचाई को आवश्यकता के अनुरूप चालू और बंद करके अपने खेत में सिंचाई का प्रबंधन कर सकता है। छत्तीसगढ़ में कृषि क्षेत्र में सौर ऊर्जा और ऑटोमेशन तकनीक का मेल किसानों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो रहा है। क्रेडा (छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण) ने सौर पंप ऑटोमेशन तकनीक का सफल प्रयोग कर किसानों को नई सुविधा प्रदान की है। किसान अपने खेत में सोलर पंप को दुनिया के किसी भी कोने से मोबाइल के माध्यम से संचालित कर रहे हैं। क्रेडा द्वारा सौर पंपों में इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित ऑटोमेशन तकनीक जोड़ी गई है। यह तकनीक किसानों को अपने पंपों को दूरस्थ रूप से चालू और बंद करने की सुविधा देती है। इसके लिए केवल एक मोबाइल ऐप की जरूरत होती है। किसान अपने खेत पर शारीरिक रूप से मौजूद हुए बिना, कहीं से भी सिंचाई प्रबंधन कर सकते हैं। क्रेडा के सीईओ राजेश सिंह राणा ने बीते दिनों धमतरी जिले के भ्रमण के दौरान सौर संयंत्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने देखा कि किसान रमन साहू अपने खेत में लगे सोलर पंप को बिना वहां गए, केवल मोबाइल फोन से ऑपरेट कर रहे थे। किसान ने बताया, मैं अपने घर से ही पंप चालू और बंद कर लेता हूं। रमन ने बताया कि एक बार वह असम गए थे, तब भी मैंने वहां से अपने पंप को ऑपरेट किया। किसान रमन साहू के खेत में सौर सुजला योजना के तहत फरवरी 2024 में 3 एचपी का सोलर पंप स्थापित किया गया था। इस पंप में अत्याधुनिक ऑटोमेशन तकनीक शामिल है, जिससे पंप को स्मार्टफोन और नेटवर्क की मदद से कहीं से भी नियंत्रित किया जा सकता है। इस तकनीक से किसान अपने समय, ऊर्जा और संसाधनों की बचत कर रहे हैं। गौरतलब है कि क्रेडा द्वारा किसानों के सौर सुजला सिंचाई पम्प संबंधी समस्याओं के निदान के लिए सौर समाधान मोबाइल ऐप तैयार किया गया है। इस ऐप के माध्यम से किसानों शिकायतों का निवारण जिला या प्रधान कार्यालय स्तर पर किया जाता है। क्रेडा की यह पहल छत्तीसगढ़ के किसानों को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ रही है। यह नवाचार कृषि क्षेत्र में दक्षता और उत्पादकता को भी बढ़ावा दे रहा है।

## संपादकीय

### परीक्षाओं पर संदेह का साया

उत्तरी राज्यों में सरकारी नौकरियों में भर्ती की तमाम परीक्षाओं पर संदेह का साया घिरा हुआ है। पेपर इतनी बार लीक हुए हैं या इन्हें अदालतों ने रद्द किया है कि परीक्षाओं को लेकर अविश्वास का माहौल बनना लाजिमी है। बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की संयुक्त (प्रारंभिक) परीक्षा में शामिल हुए छात्र दोबारा इम्तहान की मांग को लेकर जिस ढंग से जान दांव पर लगाए हुए हैं, उसके कारणों को समझना बेहद जरूरी है। इसके दो प्रमुख आयाम है: पहला यह कि उत्तरी राज्यों में सरकारी नौकरियों में भर्ती के होने वाली तमाम परीक्षाओं की संदिग्ध हो चुकी है। पेपर इतनी बार लीक हुए हैं या गड़बडियों के आरोप में इन्हें इतनी बार अदालतों ने रद्द किया है कि परीक्षाओं को लेकर अविश्वास का माहौल बना चुका है। दूसरा पहलू समाज में अच्छे रोजगार के अवसरों का बेहद सिकुड़ जाना है। इस कारण सरकारी नौकरियां ही स्थिर करियर का एकमात्र आश्वासन रह गई हैं। बिहार एवं उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, जहां निजी कारोबार में सम्मानजनक काम पाने की गुंजाइशें बेहद सीमित हैं, वहां इन नौकरियों को लेकर मारामारी मचने की मिसालें और भी ज्यादा देखने को मिल रही हैं। पटना की सड़कों पर बिहार के विभिन्न इलाकों से आए सैकड़ों छात्र दो हफ्तों से कड़ी ठंड के बीच बीपीएसी परीक्षा को दोबारा आयोजित करने की मांग इसलिए कर रहे हैं, क्यों उन्हें पेपर लीक का शक है। छात्रों ने परीक्षा में कई दूसरी तरह की अनियमितताओं के आरोप भी लगाए हैं। इनमें प्रश्न पत्र के स्तरहीन होने और कोचिंग संस्थानों के मॉडल सवालों के मेल खाने के इल्जाम शामिल हैं। आरोप है कि कई केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरा और जैमर काम नहीं कर रहे थे। कुछ केंद्रों पर प्रश्न पत्र देरी से वितरित किए गए। परीक्षा से कुछ समय पहले भी ये छात्र पटना में इकट्ठा हुए थे। तब उनकी मांग थी कि सारे राज्य में एक ही दिन, एक ही समय, और एक ही प्रकार के प्रश्न पत्र पर इम्तहान लिया जाए। विरोध को देखते हुए अलग-अलग केंद्रों पर अलग परीक्षा आयोजित करने का इरादा बिहार लोक सेवा आयोग ने तब टाल दिया था। मगर परीक्षा के बाद दूसरे संदेह खड़े हुए। तो अब छात्रों की चिंताओं पर सहानुभूति से गौर किया जाना चाहिए। उन पर लाठी-डंडा या ठंडे पानी की बौछार चलाना कोई समाधान नहीं है, जैसाकि रविवार को हुआ।

### पूंजीवादी व्यवस्था और आदर्श समाज की स्थापना

**भारत डोगरा**

इतिहास के पृष्ठों में यह सवाल बार-बार उभरता रहा है कि किसी भी समय का कोई समाज आदर्श के कितना नजदीक या दूर रहा है, पर इसके बावजूद यह आदर्श समाज या देश कैसा होना चाहिए इसके बारे में मतभेद आज तक बने हुए हैं। अनेक बड़े स्वार्थ और ताकतें अपने हितों के अनुसार इस आदर्श समाज की सोच प्रस्तुत करते हैं और फिर अपने संसाधनों के भरपूर उपयोग से इस सोच का ही प्रचार-प्रसार करवाते हैं और अनुचित को उचित, गलत को सही सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इसका एक उदाहरण तो यह सोच है कि किसी एक देश का विश्व पर या बड़े क्षेत्र पर दबदबा या आधिपत्य उस देश का आदर्श है। इस तरह की सोच से किसी का भी भला नहीं होगा और बहुत सी हिंसा नाहक होगी पर शक्तिशाली देशों के असरदार व्यक्ति ऐसी सोच को तरह-तरह की आकषर्क शब्दावली में प्रस्तुत करते हैं तो उनका बहुत महिमा-मंडन किया जाता है क्योंकि शक्तिशाली और संसाधन संपन्नों को ऐसी सोच की जरूरत है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूंजीवादी और साम्यवादी देशों में एक होड़ थी कि किस व्यवस्था को विश्व में अधिक लोग अपने आदर्श के रूप में देखें और अपनाएं। दोनों व्यवस्थाओं ने अपना खूब प्रचार किया पर अपनी भीतरी समस्याओं और विसंगतियों को दूर नहीं किया। अत: पूंजीवादी व्यवस्था में शोषण और विषमता, पर्यावरण विनाश और युद्ध को बढ़ाने की प्रवृत्ति बनी रही तो साम्यवादी व्यवस्थाओं में अपने ही लोगों पर अत्याचार हुए और इसका पर्याप्त विरोध भी वहां नहीं किया जा सका। सोवियत संघ के विघटन के बाद चीन ने भी पूंजीवादी देशों से सहयोग का रास्ता ही अपनाया और ऐसा लगा और प्रचारित भी हुआ कि अब तो पूंजीवाद की ही जीत है पर इस तरह की बहुत अनुकूल स्थितियों के बाद सबसे शक्तिशाली देशों ने युद्ध की प्रवृत्ति को छोड़ा नहीं अपितु विनाशकारी युद्धों और हमलों में दुनिया को उलझा दिया। यहां तक कि इस कारण तीसरे महायुद्ध का खतरा भी सामने आ गया। आक्रामकता के साथ पूंजीवाद की स्व-विनाशकारी प्रवृत्तियां भी नजर आई और अनुकूल स्थितियों के रहते हुए भी प्रमुख पूंजीवादी देशों (जैसे अमेरिका और ब्रिटेन) में बड़ी संख्या में लोग बुनियादी जरूरतों को जुटाने तक के लिए संघर्ष करते हुए पाए गए हैं, जबकि आज जर्मनी भी अपनी बिगड़ती आर्थिक स्थिति के बारे में बहुत चिंतित हैं। अत: बहुत अनुकूल स्थितियां मिलने पर भी पूंजीवादी व्यवस्था आदर्श समाज की स्थापना व्यापक और दीर्घ स्तर पर करने में विफल है। कुछ छोटे देशों ने थोड़े समय के लिए बेहतर परिणाम प्राप्त किए हैं, पर ये बहुत टिक नहीं पाए हैं (नाव्रे, स्वीडन आदि देशों के अनुभव) और न ही ये पूंजीवाद की कुछ व्यापक विसंगतियों से बच पाए हैं। दूसरी ओर, पर्यावरण और छोटे किसानों के हितों की रक्षा न कर पाने, लोकतंत्र और लोकतांत्रिक विपक्ष को उचित मान्यता न देने के कारण साम्यवादी व्यवस्थाएं भी अपनी इस मान्यता को तेजी से खो रही हैं जो उन्होंने बहुत से न्यायप्रिय व्यक्तियों के बीच एक समय प्राप्त की थीं। इन निराशाओं के बावजूद मनुष्य की आदर्श व्यवस्था के लिए तलाश जारी रहेगी और अधिक सार्थक परिणाम के लिए उसे पहले की गलतियों से सीखते हुए ही आगे बढना होगा। मौजूदा समय विशेष कठिनाइयों का समय है क्योंकि अनेक पर्यावरणीय समस्याएं एक साथ विकट होती जा रही हैं, युद्ध अधिक खतरनाक होते जा रहे हैं और हथियार अधिक विनाशकारी होते जा रहे हैं। यह समय बहुत सावधानी से सही मार्ग खोजने का है, और उसी राह पर आगे बढने का है। इस स्थिति में यदि आदर्श समाज को इस तरह परिभाषित कर सकें जो सरल होते हुए भी तर्कसंगत हो और जिसे बहुत से लोग आसानी से समझ कर अपना सकें तो यह बहुत उपयोगी होगा। आदर्श समाज वह समाज है जो न्याय और समता, अमन-शांति और लोकतंत्र, पर्यावरण, सामाजिक संबंधों की प्रगाढ़ता, ईमानदारी, महिला-सम्मान, भेदभाव की समाप्ति और सभी जीवन-रूपों के लिए करुणा पर आधारित है। इन सभी जीवन-मूल्यों को स्थानीय स्थितियों के आधार पर अपनाना चाहिए और इस तरह आदर्श समाज का रूप विश्व में विभिन्न स्थानों पर कुछ अलग जरूर होगा पर फिर भी चूंकि बुनियादी जीवन-मूल्य एक ही हैं, तो इसमें बहुत समानता भी होगी।

# क्या आप लगा पाएगी दिल्ली में चुनावी चौका

**रमेश सर्राफ धमोरा**

आगामी पांच फरवरी को दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए वोट डाले जाएंगे। चुनाव जीतने के लिए सभी राजनीतिक दल जोड़-तोड़ करने में जुट गए हैं। चुनाव में मुख्य मुकाबला भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), आम आदमी पार्टी (आप) व कांग्रेस पार्टी के बीच होना तय माना जा रहा है। पिछले दो विधानसभा चुनाव में मुख्य मुकाबला आप व भाजपा के बीच हुआ था। कांग्रेस का प्रदर्शन बहुत खराब रहा था। मगर इस बार कांग्रेस पार्टी पूरे दमखम के साथ चुनाव लड़ने जा रही है। पिछले लोकसभा चुनाव में जहां कांग्रेस पार्टी ने आम आदमी पार्टी से गठबंधन कर चुनाव लड़ा था। वहीं विधानसभा चुनाव कांग्रेस अकेले ही लड़ेगी। कांग्रेस के अकेले चुनाव लड़ने व पिछले लोकसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करने के कारण दिल्ली विधानसभा चुनाव में मुकाबला त्रिकोणात्मक होने की संभावना बनने लगी है। दिल्ली में तीन बार सरकार बनाकर आप ने मजबूत पकड़ बनायी हैं। वहीं लोकसभा चुनाव में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद भाजपा आप के सामने टिक नहीं पा रही है।

आप के अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस पार्टी के समर्थन से 28 दिसंबर 2013 को पहली बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। मगर कांग्रेस द्वारा समर्थन वापस लेने के चलते 49 दिन में ही सरकार गिर गई थी। फरवरी 2015 में हुए विधानसभा चुनाव में आप ने 67 सीटें जीतकर एक नया इतिहास रच दिया था। आप को 54.34 प्रतिशत वोट मिले थे। अरविंद केजरीवाल ने 14 फरवरी 2015 को दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उस चुनाव में भाजपा को मात्र तीन सीट तथा 32.19 प्रतिशत वोट मिले थे। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली तथा वोट भी घटकर 9.65 प्रतिशत रह गये थे।

2020 के विधानसभा चुनाव में आप ने 62 सीटे जीतकर 53.57 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे। 16 फरवरी 2020 को अरविंद केजरीवाल तीसरी बार दिल्ली के मुख्यमंत्री बने थे। 2020 के चुनाव में भाजपा की सीट तीन से बढ़कर आठ तक पहुंच गई थी तथा वोटो का प्रतिशत भी बढ़कर 38.51 प्रतिशत हो गया था। कांग्रेस को इस बार भी कुछ नही मिला था। कांग्रेस को 4.26 प्रतिशत वोट ही मिले थे। कांग्रेस के अधिकांश प्रत्याशियों की जमानत जप्त हो गई थी। 2 अक्टूबर 2012 को गांधी जयंती के दिन आम आदमी पार्टी का गठन किया गया था। पार्टी के गठन के ठीक एक साल एक महीने और दो दिन बाद 4 दिसंबर 2013 को दिल्ली विधानसभा चुनाव के वोट डाले गए थे। 8 दिसंबर 2013 को चुनाव के नतीजे आए तो आप को 28 सीटें तथा 29.49 प्रतिशत वोट मिले थे। पार्टी अध्यक्ष अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को उनकी नई दिल्ली सीट पर करीब 26000 वोटो से हराया था। उस चुनाव में भाजपा को 31 सीट व 33.07 प्रतिशत वोट मिले थे। वहीं कांग्रेस को 8 सीट व 24.55 प्रतिशत वोट मिले थे।

उस वक्त कांग्रेस ने भाजपा को सत्ता से दूर रखने के चक्कर में आप को समर्थन देकर अरविंद केजरीवाल को पहली बार मुख्यमंत्री बनवाया था। कांग्रेस की यही भूल अब तक कांग्रेस को लगातार जीरो पर आउट कर रही है। उस वक्त यदि कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी को समर्थन नहीं दिया होता तो आगे विधानसभा चुनाव के नतीजे अलग हो सकते थे। मगर अपनी भूल का कांग्रेस आज तक खामियाजा उठा रही है। 1998 से 2008 तक लगातार तीन विधानसभा चुनाव जीत कर सरकार बनाने वाली कांग्रेस 2013 में मात्र 8 सीटों पर सिमट गई थी। कांग्रेस की एक भूल उस पर इतनी भारी पड़ गई कि वह आज तक संभल नहीं पा रही है।

दिल्ली में लोकसभा चुनाव के करीब 8 महीने बाद विधानसभा चुनाव होते हैं। लोकसभा चुनाव में भाजपा 2014 से 2024 तक लगातार दिल्ली की सातों सीटों पर जीत दर्ज करवाती आ रही है। वहीं विधानसभा चुनाव में मतदाताओं के वोट डालने का ट्रेंड बदल जाता है। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने सभी सात सीटों पर जीत दर्ज कर 46.63 प्रतिशत यानी 38 लाख 38 हजार 850 वोट प्राप्त किए तथा 60 विधानसभा सीटों पर आगे रही थी। आप को 33.08 प्रतिशत यानी 27 लाख 22 हजार 887 वोट मिले थे तथा 10 सीटों पर आगे रही थी। वहीं कांग्रेस को 15.22 प्रतिशत यानी 12 लाख 53 हजार 78 वोट मिले थे। कांग्रेस एक सीट पर भी आगे नहीं थी। वही 2015 के विधानसभा चुनाव में आप को 67 सीटों पर जीत मिली थी।

इसी तरह 2019 में भाजपा ने 56.85 प्रतिशत यानी 49 लाख 8 हजार 541 वोट लेकर सभी सीट जीती थी। तथा 65 विधानसभा सीटों पर आगे रही थी। वहीं आप को 18.20 प्रतिशत यानी 15 लाख 71 हजार 687 वोट मिले थे और सीट एक भी नहीं जीती थी। आप किसी विधानसभा सीट पर आगे नहीं रही थी। वहीं कांग्रेस को 22.63 प्रतिशत यानी 19 लाख 53 हजार 900 वोट मिले थे। कांग्रेस को सीट एक भी नहीं मिली मगर पांच विधानसभा सीट पर आगे रही थी।

2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने लगातार तीसरी बार सभी सातों सीटों को जीतकर 54.35 प्रतिशत यानी 48 लाख 44 हजार 180 वोट प्राप्त किए थे। वहीं 52 विधानसभा सीटों पर आगे रही थी। आप को एक भी सीट पर जीत नहीं मिली थी। पार्टी को 24.17 प्रतिशत यानी 21 लाख 54 हजार एक वोट मिला था। पार्टी 10 विधानसभा सीटों पर आगे रही थी। वहीं कांग्रेस का भी सुपड़ा साफ हो गया था तथा उसे एक भी सीट नहीं मिली थी। कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी से समझौता कर चुनाव लड़ा था। समझौते में आप ने चार व कांग्रेस ने तीन सीटों पर चुनाव लड़ा था। जिसमें कांग्रेस को 18.91 प्रतिशत यानी 16 लाख 85 हजार 494 वोट मिले थे। कांग्रेस ने आठ विधानसभा सीटों पर बढ़त हासिल की थी। पिछले दो विधानसभा चुनाव के मतदान का ट्रेंड देखे तो दिल्ली में करीबन 16 से 18 प्रतिशत मतदाता ऐसे होते हैं जो किसी भी पार्टी के समर्थन नहीं है। वह हवा का रूख देख कर मतदान करते हैं। आप को स्विंग वाटरों की बदौलत दो बार भारी बहुमत मिल चुका है। स्विंग वोटर का झुकाव जिधर होता है उसी की जीत तय होती है। लोकसभा चुनाव में तो राष्ट्रीय मुद्दों के चलते स्विंग वोटर भाजपा की तरफ झुक जाता है। मगर विधानसभा चुनाव में उसका मूड बदल जाता है। जिसका लाभ आम आदमी पार्टी को मिलता है।

पांच फरवरी को होने वाले मतदान में सबसे बड़ी भूमिका इन फ्लोटिंग वोटरों की होगी। इनका झुकाव जिस तरफ होगा उसी पार्टी को जीत मिलेगी। चुनाव में बहुत कम समय बचा है। ऐसे में सभी पार्टियों के दिग्गज नेता चुनावी मैदान में उतरकर अपनी पार्टी के प्रत्याशियों को जीत दिलाने के लिए जुटे हुए हैं। जेल जाने के चलते अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा था। उनके स्थान पर अतिशी मार्लेना को 21 सितंबर 2024 को मुख्यमंत्री बनाया गया था। उसके बाद से आम आदमी पार्टी में बड़ी उठा पटक मची हुई है। इसी के चलते पार्टी ने बड़ी संख्या में पुराने विधायकों की टिकट काटी है। दूसरे दलों से आने वाले दलबदलुओं को भी बड़ी संख्या में टिकट दिया गया है।

दिल्ली विधानसभा के चुनाव ने तो इंडिया गठबंधन की नींव तक हिला डाली है। जहां गठबंधन में शामिल कांग्रेस व आप आमने-सामने चुनाव लड़ रहे है। वहीं तृणमूल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, शिवसेना (यूबीटी) ने आप को समर्थन देने की घोषणा कर कांग्रेस को ठेंगा दिखा दिया है। आप के लिए लगातार चौथी बार जीत का चौका लगाने का सुनहरा मौका है। वहीं भाजपा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में अपनी सरकार बना कर डबल इंजन की सरकार का नारा सार्थक करना चाहती है। कांग्रेस का भी प्रयास है कि कुछ सीट जीत कर अपनी खोई प्रतिष्ठा को फिर से हासिल किया जाए। बहरहाल सभी दलों के लिए इस बार का चुनाव बड़ा ही रोमांचक व कड़ी टक्कर वाला होने जा रहा है। मगर दिल्ली का मुख्यमंत्री वही बनेगा जिसे दिल्ली की जनता चाहेगी।

# टीम चयन में गलतियां

**मनोज चतुर्वेदी**

भारतीय टीम सिडनी टेस्ट में हार कर पिछले एक दशक में पहली बार ऑस्ट्रेलिया के हाथों बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को गंवा बैठी। इस दौरे और इससे पहले न्यूजीलैंड के हाथों घर में पहली बार 3-0 से सफाये के बाद लगने लगा है कि टीम इंडिया में अब बदलाव की जरूरत है। सही है कि इस सीरीज को खोने में बल्लेबाजों के योजना के हिसाब से नहीं खेलने, टीम चयन में गलतियां करने की तो भूमिका रही ही, टीम के दिग्गज बल्लेबाजों का नहीं चलना भी बड़ा कारण रहा। बेहतरीन स्पिनरों में शुमार रखने वाले रविचंद्रन अिन के बीच दौरे में संन्यास लेने की घोषणा के बाद महसूस किया जा रहा था कि कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली भी इस तरफ कदम बढ़ा सकते हैं। भारतीय कप्तान ने अपनी खराब फॉर्म की वजह से जब सिडनी टेस्ट की अंतिम एकादश से अपने को बाहर रखा तो लगा कि बदलाव के दौर की शुरुआत होने जा रही है। पर रोहित ने अगले ही दिन साफ कर दिया कि सिडनी टेस्ट नहीं खेलने का फैसला टीम के हित में लिया गया था पर मैं टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने नहीं जा रहा। वहीं विराट ने भी ऐसे कोई संकेत नहीं दिए हैं। शायद इसकी वजह भारत को अब जून माह में इंग्लैंड का दौरा करके विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अगले संस्करण की शुरुआत करनी है। अगला टेस्ट सीरीज में लंबा समय होने की वजह से ही शायद वह इस बारे में सोचने के लिए समय लेना चाहते हैं। भारतीय कोच गौतम गंभीर से जब सीरीज खत्म होने पर सवाल पूछा गया कि रेड बॉल क्रिकेट में क्या दीर्घकालीन योजना बनाने और युवाओं पर फोकस करने का समय आ गया है, तो उनका जवाब था कि इस बारे में तत्काल चर्चा की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि टेस्ट सीरीज पांच महीने बाद होनी है। पांच महीने में बाद क्या होगा, हमें पता नहीं है। उस समय कौन कहां होगा। मैं इतना ही कह सकता हूं कि जो भी होगा, टीम के हित में होगा। गंभीर ने इतना जरूर कहा कि मैं किसी खिलाड़ी के भविष्य के बारे में कुछ नहीं कह सकता, यह उन पर ही निर्भर है पर सीनियर खिलाडियों में अभी भूख बाकी है और वह भारतीय क्रिकेट को आगे ले जा सकते हैं। मौजूदा भारतीय टीम ही नहीं, बल्कि हर टीम में बदलाव का दौर आता है। 2011-14 तक भी भारतीय टीम में ऐसा ही दौर आया था। उस समय सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, अनिल कुंबले और वीवीएस लक्ष्मण जैसे खिलाडियों ने संन्यास लिया था और उनकी जगह विराट कोहली, रोहित शर्मा, चेतेर पुजारा और रविचंद्रन अिन ने ली थी। खिलाडियों को तो अक्सर लगता है कि उनमें अभी क्रिकेट बाकी है पर इस बारे में चयन समिति और कोच को ही सख्त फैसला करने की जरूरत होती है। तभी सही समय पर विकल्प तैयार किए जा सकते हैं।

# आखिर प्रवासी श्रमिकों की दुर्दशा का कारण क्या है?

**डॉ सत्यवान सौरभ**

भारत के असंगठित कार्यबल का एक महत्त्वपूर्ण लेकिन कमज़ोर वर्ग, प्रवासी श्रमिक, अक्सर सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों से बाहर रह जाते हैं। दशकों से कानूनी ढाँचे और सिफारिशों के बावजूद, सामाजिक सुरक्षा तक उनकी पहुँच अपर्याप्त रही है। अंतरराज्यीय प्रवासी कामगार अधिनियम, 1979 में प्रावधान और असंगठित क्षेत्र में राष्ट्रीय उद्यम आयोग (2007) और असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम (2008) द्वारा श्रमिक पंजीकरण के लिए सिफारिशों के बावजूद, ई-श्रम पोर्टल तक प्रवासी श्रमिक आधिकारिक डेटाबेस में काफ़ी हद तक अदृश्य रहे। जबकि ई-श्रम पोर्टल पर 300 मिलियन से अधिक श्रमिक पंजीकृत हैं, उनमें से अधिकांश को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में एकीकृत नहीं किया गया है। मौसमी और परिपत्र प्रवासियों को वंचितता, कलंक, तस्करी और सार्वजनिक सेवाओं तक खराब पहुँच सहित अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उनकी उच्च गतिशीलता सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने को जटिल बनाती है। कई श्रमिकों में डिजिटल साक्षरता या ई-श्रम पंजीकरण और लाभ ट्रैकिंग के लिए आवश्यक उपकरणों तक पहुँच की कमी है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। राज्यों में अक्सर कल्याणकारी योजनाओं का असंगत कार्यान्वयन होता है, जिससे समन्वय सम्बंधी समस्याएँ पैदा होती हैं जो लाभों की पोर्टेबिलिटी को कमज़ोर करती हैं।

मौजूदा कल्याणकारी योजनाएँ जैसे कि मनरेगा, पीएम श्रम योगी मानधन और वन नेशन वन राशन कार्ड अक्सर अलग-अलग तरीके से काम करती हैं, जिससे प्रवासी श्रमिकों के लिए निर्बाध पहुँच में बाधाएँ पैदा होती हैं। 2021 में लॉन्च किए गए ई-श्रम पोर्टल का उद्देश्य असंगठित श्रमिकों का दुनिया का सबसे बड़ा राष्ट्रीय डेटाबेस बनाना है। इसमें 300 मिलियन से अधिक श्रमिक पंजीकृत हैं, जिनमें प्रवासियों का एक महत्त्वपूर्ण अनुपात शामिल है। यह कल्याणकारी योजनाओं के लिए श्रमिकों की बेहतर पहचान और लक्ष्यीकरण की सुविधा प्रदान करता है। हालाँकि, यह मुख्य रूप से एक 卐पंजीकरण अभियान卐 है जिसका सामाजिक सुरक्षा में समावेश पर सीमित ध्यान है। 2024 में लॉन्च किया गया विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को ई-श्रम पोर्टल के साथ एकीकृत करके पंजीकरण और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच के बीच की खाई को पाटने का प्रयास करता है। इसके लाभों में एकीकृत दृष्टिकोण, लाभों की पोर्टेबिलिटी और पारदर्शी तथा श्रमिक-अनुकूल प्रक्रिया शामिल है। हालाँकि, चिंताओं में मौजूदा योजनाओं का सीमित कवरेज, श्रमिकों में जागरूकता की कमी और अंतर-राज्य समन्वय का कमज़ोर होना शामिल है। ई-श्रम पोर्टल और ओएसएस प्रवासी श्रमिकों के सामने आने वाली सामाजिक सुरक्षा चुनौतियों को सम्बोधित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम है। हालाँकि, उनकी सफलता कार्यान्वयन बाधाओं पर काबू पाने, निर्बाध अंतर-राज्य समन्वय सुनिश्चित करने और श्रमिकों के बीच जागरूकता बढ़ाने पर निर्भर करती है।

आंकड़ों के अनुसार, जो लोग आजीविका की तलाश में स्थानीय और क्षेत्रीय सीमाओं के पार जाते हैं, उन्हें अपने मेजबान समाज में स्थायी रूप से बाहरी समझे जाने का अपमान सहना पड़ता है। श्रमिकों को अक्सर टेलीविजन स्क्रीन पर दुखद घटनाओं के पात्र के रूप में दिखाया जाता है, जिससे उनके योगदान और उन्हें प्राप्त मान्यता के बीच का अंतर उजागर होता है। राष्ट्र के बुनियादी ढांचे के पीछे की ताकत होने के बावजूद, राष्ट्रीय महानता के विमर्श में उनकी भूमिका को शायद ही कभी स्वीकार किया जाता है। पॉलिसी शून्य होने के कारण अक्सर असुरक्षित छोड़ दिया जाता है यद्यपि प्रवासी कार्यबल राष्ट्रीय गौरव के प्रत्यक्ष चिह्नों में महत्वपूर्ण योगदान देता है, फिर भी उनके अधिकारों को नियंत्रित करने वाली नीतियों का घोर अभाव है। अंतरराज्यीय प्रवासी कर्मकार अधिनियम, 1979, इस विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करने वाला एकमात्र कानून है। हालाँकि, आवास, स्वास्थ्य देखभाल, न्यूनतम मजदूरी और भेदभावपूर्ण प्रथाओं की रोकथाम के लिए इसके प्रावधान अक्सर अधूरे रह जाते हैं। प्रवासी श्रमिकों के साथ उनकी मानवता पर विचार किए बिना एक नौकरी मशीन की तरह व्यवहार किया जाता है। सरकारी प्रणालियाँ अक्सर प्रवासी श्रमिकों के सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियों और परिवर्तनों की परवाह नहीं करतीं।

प्रवासी श्रमिकों को न केवल कानूनी सुरक्षा नहीं मिलती बल्कि उन्हें शहर के प्रतिकूल वातावरण में भी संघर्ष करना पड़ता है। शहर सड़कों और इमारतों जैसे निर्माण के लिए प्रवासी श्रमिकों पर निर्भर रहते हैं, लेकिन इन शहरों में इन प्रवासी श्रमिकों की बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त सहायता नहीं होती है। यहां स्वास्थ्य सेवा, वित्तीय सहायता, रहने के लिए अच्छे स्थान, सुरक्षा उपाय या बच्चों की देखभाल की सुविधाएं नहीं हैं। इससे प्रवासी श्रमिकों को सब कुछ खुद ही संभालना पड़ता है। शहरी क्षेत्रों में प्रवासी श्रमिकों के बच्चों की दुर्दशा विशेष रूप से चिंताजनक है। शिशुओं को बड़े बच्चों की देखभाल में छोड़ दिया जाता है, जिनके पास स्वयं सार्थक शैक्षिक गतिविधियों तक पहुंच नहीं होती। इससे असुविधा का एक चक्र निर्मित होता है, जहां शिक्षा के अवसरों की कमी उनके माता-पिता द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों से मुक्त होने की उनकी क्षमता में बाधा डालती है। प्रवासी श्रमिकों के लिए, एक टूटा हुआ अंग अक्सर कामकाजी जीवन के अंत का संकेत देता है। कार्यस्थल पर लगी चोटों के लिए शायद ही कभी पर्याप्त सहायता या चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हो पाती हैं। घायल श्रमिक अपने घर लौटने के लिए बाध्य होते हैं, तथा उपलब्ध स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं, क्योंकि शहरी क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं तक त्वरित और आवश्यक पहुंच बहुत कम उपलब्ध होती है। गांवों से शहरी क्षेत्रों की ओर मौसमी प्रवास की आवश्यकता, प्रवासी श्रमिकों के समक्ष चुनौतियों को और बढ़ा देती है। शहरी आवास की स्थिति अक्सर बहुत खराब होती है, जिससे शहर का मौसम दुख का एक अतिरिक्त स्रोत बन जाता है। प्रवासी श्रमिकों के लिए काम से परे जीवन की गंभीर वास्तविकताएं तत्काल ध्यान देने और व्यापक समाधान की मांग करती हैं। विचारशील शहरी नियोजन को कार्यस्थलों से आगे बढ़कर प्रवासी श्रमिकों के जीवन के संपूर्ण आयाम को शामिल करना चाहिए, जिससे न केवल रोजगार बल्कि सम्मान, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा भी उपलब्ध हो सके। बच्चों के लिए शिक्षा के अवसरों की उपेक्षा, घायल श्रमिकों के लिए सहायता की कमी, तथा शहरी आवास की प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए लक्षित नीतियों की आवश्यकता है। प्रवासी श्रमिकों के सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियों से निपटने के लिए नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करती है। उनकी विविधता का केवल जश्न मनाने के बजाय, उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को समझने और उन्हें पूरा करने के लिए ठोस प्रयास किए जाने चाहिए। इसके लिए एक ही नीति के दृष्टिकोण से हटकर सूक्ष्म नीतियों की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है, जो प्रवासी श्रम शक्ति की जटिलताओं पर विचार करें।

# मौनी अमावस्या पर महाकुंभ का तीसरा अमृत स्नान

**महा कुंभ 2025 शाही स्नान की तिथियां-**
पौष पूर्णिमा : 13 जनवरी
मकर संक्रांति : 14 जनवरी
मौनी अमावस्या : 29 जनवरी
वसंत पंचमी : तीन फरवरी
माघी पूर्णिमा : 12 फरवरी
महाशिवरात्रि : 26 फरवरी

प्रयागराज में महा कुंभ पौष पूर्णिमा (13 जनवरी 2025) से प्रारंभ हो चुका है और इसका समापन 26 फरवरी 2025 को होगा। महा कुंभ का पहला शाही स्नान पौष पूर्णिमा पर हुआ और दूसरा शाही स्नान मकर संक्रांति (14 जनवरी 2025) को किया गया है। अब महा कुंभ का तीसरा शाही स्नान मौनी अमावस्या पर किया जाएगा। इस साल मौनी अमावस्या 29 जनवरी 2025 को है।

**महा कुंभ के तीसरे शाही स्नान के शुभ मुहूर्त:**
ब्रह्म मुहूर्त- 05 :25 ए एम से 06 :18 ए एम
प्रात : सन्ध्या- 05 :51 ए एम से 07 :11 ए एम
विजय मुहूर्त- 02 :22 पी एम से 03 :05 पी एम
गोधूलि मुहूर्त- 05 :55 पी एम से 06 :22 पी एम

**माघ कृष्ण अमावस्या कब से कब तक रहेगी :** द्रिक पंचांग के अनुसार, माघ कृष्ण अमावस्या 28 जनवरी 2025 को शाम 07 बजकर 35 मिनट पर प्रारंभ होगी और 29 जनवरी 2025 को शाम 06 बजकर 05 मिनट तक रहेगी।

**महा कुंभ में शाही स्नान का महत्व :** महा कुंभ में शाही स्नान का विशेष महत्व है। धर्म ग्रंथों के अनुसार, महा कुंभ में शाही स्नान करने से आध्यात्मिक शुद्धि, पापों का प्रायश्चित, पुण्य व मोक्ष की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि संगम में डुबकी लगाने से कई गुना ज्यादा पुण्य मिलता है।

# लिपस्टिक को ठीक करने के लिए अपनाएं ये 3 ब्यूटी हैक्स

चेहरे पर लिपस्टिक लगाए बिना मेकअप पूरा नहीं माना जाता है। होंठों पर लगा लिपस्टिक का एक कोट, चेहरे की रंगत बदलकर आपके लुक को निखारने में मदद करता है। यही वजह है कि ज्यादातर महिलाओं के पास अपने एक फेवरेट ब्रांड और शेड की लिपस्टिक जरूर होती है। जिसे वो किसी दूसरी महिला के साथ शेयर करना पसंद नहीं करती हैं। पर्स में रखा अपनी मनपसंद लिपस्टिक का शेड कई बार जब संभालकर रखने के बावजूद बाकी चीजों से लगकर टूट जाता है तो हर महिला का मन उदास हो जाता है। जिसे फेंकने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचता है। अगर आपके साथ भी कभी ऐसा हो तो अपनी फेवरेट लिपस्टिक फेंकने की जगह उसे इन ब्यूटी हैक्स की मदद से दोबारा पहले जैसा जोड़ लें। टूटी हुए लिपस्टिक को ठीक करने के तरीके

**1 हीटिंग :-** टूटी हुई लिपस्टिक को दोबारा जोड़ने का सबसे असरदार तरीका हीटिंग प्रोसेस है। इस तरीके में आपको टूटी हुई लिपस्टिक के दोनों हिस्सों को जोड़ने के लिए हीटिंग की मदद चाहिए होती है। इस हैक्स को फॉलो करने के लिए टूटी हुई लिपस्टिक के दोनों टुकड़ों को एक साथ रखकर एक चम्मच को हल्का गर्म करके लिपस्टिक के दोनों टूटे हुए किनारों पर लगाएं। थोड़ी देर तक ऐसा करने के बाद दोनों हिस्सों को धीरे से जोड़ें। लिपस्टिक ठंडी होने पर पहले जैसी हो जाएगी।

**2 फ्रीजर**
अगर आपकी लिपस्टिक हाल-फिलहाल में टूटी है तो उसे जल्दी से ठीक करने के लिए फ्रीजर में रख दें। ध्यान रखें, टूटी हुई लिपस्टिक के टुकड़ों को एक साथ जोड़ने के बाद, उसे 15 मिनट के लिए फ्रीजर में रखने से वो चिपककर हार्ड हो जाएगी। जिसे आप दोबारा यूज कर सकते हैं।

**3 नए लिपस्टिक केस की लें मदद**
कई बार लिपस्टिक टूटकर इतनी ज्यादा खराब हो जाती है कि आपके पास उसे फेंकने के अलावा कोई ऑप्शन नहीं बचता है। अगर आपके साथ भी ऐसा हुआ तो अपनी फेवरेट लिपस्टिक को फेंकने की जगह नए लिपस्टिक केस में डाल दें। इसके लिए टूटी हुई लिपस्टिक के टुकड़ों को साफ करके उसे मेल्ट कर लें। इसके बाद उसे नए लिपस्टिक केस में ट्रांसफर कर दें। आप बुलेट लिपस्टिक ब्रश की मदद से दोबारा यूज कर सकती हैं।

# रोज सुबह खाली पेट खा लें एक चम्मच देसी घी

देसी घी भारतीय रसोई की शान है। बिना घी का तड़का लगाएं या रोटी और पराठों पर घी चुपड़े वो स्वाद भला कहां आता है। सिर्फ स्वाद ही नहीं बल्कि हमारी सेहत के लिए भी इसके अनगिनत फायदे हैं। तभी तो बड़े-बुजुर्ग अक्सर देसी घी को अपनी डाइट में शामिल करने की सलाह देते हैं। आजकल तो देसी घी को अपनी डाइट में शामिल करने के नए-नए तरीके भी ईजाद हुए हैं। सुबह की घी कॉफी हो या घी शॉट्स। इसके अलावा एक और तरीका काफी पॉपुलर हुआ है, जिसमें सुबह खाली पेट एक चम्मच घी खाया जाता है। इसके भी ढेर हेल्थ बेनिफिट्स हैं, जिनके बारे में हम आज बात करने वाले हैं।

**वेट लॉस में फायदेमंद**
अगर आपको लगता है कि देसी घी खाने से मोटापा बढ़ता है तो आपको अपनी ये धारणा बदलने की जरूरत है। दरअसल घी में ब्यूटेरिक एसिड पाया जाता है, जो एक्स्ट्रा फैट को हटाने में मदद करता है। ऐसे में अगर आप वेट लॉस कर रहे हैं, तो रोजाना सुबह खाली एक चम्मच घी लेना शुरू कर दें। ये आपकी वेट लॉस जर्नी को और आसान और इफेक्टिव बना देगा। हालांकि इस चक्कर में घी की मात्रा काफी ज्यादा ना बढ़ा दें। ये आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है।

**पाचन को रखे दुरुस्त**
सुबह खाली पेट एक चम्मच घी खाने से गट हेल्थ भी दुरुस्त रहती है। खाली पेट जब आप घी खाते हैं तो ये आंतों में लुब्रिकेशन का काम करता है। इससे आंतों में खाना आसानी से मूव करता है और कब्ज, अपच और ब्लोटिंग जैसी कोई समस्या नहीं होती। इसके अलावा ये शरीर में पोषक तत्वों के अबजॉरप्शन को भी बढ़ाता है, जिससे शरीर में खाना लगने लगता है। अपने पाचन तंत्र को दुरुस्त रखना है तो ये आदत आपको जरूर डाल लेनी चाहिए।

**हार्ट हेल्थ के लिए भी फायदेमंद**
देसी घी हार्ट हेल्थ के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। घी के अंदर गुड फैट्स मौजूद होते हैं जो शरीर में गुड कोलेस्ट्रॉल लेवल को बढ़ाते हैं और दिल की सेहत को दुरुस्त रखते हैं। रोजाना खाली पेट घी खाने से शरीर में इन्फ्लेमेशन कम होती है, ब्लड प्रेशर भी मैनेज रहता है। कुल मिलाकर दिल की बीमारियों के खतरे को टालना है तो अपनी डाइट में ये छोटा सा बदलाव जरूर शामिल करें।

**इम्यूनिटी को करे बूस्ट**
देसी घी शरीर की इम्यूनिटी यानी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ता है, जिससे शरीर की बीमारियों से लड़ने की कैपेसिटी भी बढ़ जाती है। दरअसल देसी घी में ब्यूटिरिक एसिड भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो शरीर में मौजूद बीमारियों से लड़ने वाले टी सेल्स के प्रोडक्शन में मदद करता है। अगर आप रोजाना नियमित रूप से खाली पेट देसी घी का सेवन करते हैं, तो ये आपके इम्यून सिस्टम को दुरुस्त रखता है।

**स्किन और बोन हेल्थ का रखे ध्यान**
रोजाना देसी घी का सेवन करने से आपकी स्किन और हड्डियां भी दुरुस्त रहती हैं। घी में मौजूद विटामिन्स स्किन को अंदर से टाइट, सॉफ्ट और ग्लोइंग बनाने का काम करते हैं। इसके अलावा ये एजिंग के प्रॉसेस को भी थोड़ा स्लो डोन करने में मदद करता है। घी में भरपूर मात्रा में विटामिन के पाया जाता है, जो कैल्शियम के एब्जॉरपशन में मदद करता है। इससे आपकी हड्डियों और दांत मजबूत बने रहते हैं।

# गर्दन और पीठ के दर्द से हैं बेहाल तो राहत देंगे ये 3 योगासन

भागती-दौड़ती जिंदगी में आज हर कोई अपने क्षेत्र में नंबर वन बने रहने का सपना पूरा करना चाहता है, लेकिन इस दौड़ में हिस्सा लेने वाले लोग कुछ समय बाद अकसर गर्दन और पीठ के दर्द से बेहाल हो जाते हैं। जी हां, कॉम्पिटिशन के इस दौर में घंटों लैपटॉप पर झुककर काम करने वाले लोग पीठ और गर्दन के दर्द की शिकायत करते हैं। इसके अलावा यह दर्द कई बार गलत पोस्चर में बैठकर काम करने से भी परेशान करने लगता है। ज्यादा दिन तक इस दर्द को नजरअंदाज करने पर व्यक्ति की समस्या बढ़ सकती है। अगर आप भी इस तरह के दर्द को फिलहाल झेल रहे हैं तो ये 3 योगासन आपकी समस्या को दूर करने में मदद कर सकते हैं।

**भुजंगासन**
भुजंगासन को कोबरा मुद्रा के नाम से भी जाना जाता है। इस आसन को करने से कमर की अकड़न दूर होती है और रीढ़ की हड्डी से जुड़ी समस्याओं में आराम मिलता है। भुजंगासन का अभ्यास करने के लिए सबसे पहले पेट के बल सीधा लेटकर अपनी हथेलियों को कंधों के नीचे रखें। अब अपनी उंगलियों को फैलाते हुए छाती को ऊपर की ओर खींचें। इसी अवस्था में बने रहते हुए सांस लें। थोड़ी देर बाद वापस पहले वाली अवस्था में आ जाएं।

**मंडूकासन**
मंडूकासन को हाफ फ्रॉग पोज या मेंढक मुद्रा भी कहा जाता है। यह छाती और कंधों को खोलने वाला आसन है, जो कूल्हों, जांघों और पीठ में लचीलापन बढ़ाता है। मंडूकासन करने के लिए सबसे पहले वज्रासन में बैठकर अपनी मुट्ठी बंद करें और अंगूठे को बाहर की तरफ रखें। अब मुट्ठी को नाभि चक्र और जांघ के पास ले जाएं। ऐसा करते हुए अपनी सांस बाहर छोड़ते हुए पेट को अंदर की तरफ खींचें। धीरे-धीरे आगे की तरफ झुकें और छाती को जांघ से छूने की कोशिश करें। जब तक इस मुद्रा में रह सकते हैं, बने रहें फिर धीरे-धीरे सांस लें और छोड़ें। वापस अपनी पहली स्थिति में आ जाएं। धीरे-धीरे इस आसन की संख्या बढ़ाएं।

**ताड़ासन**
ताड़ासन या पर्वत मुद्रा योग का एक आसन है, जो शारीरिक और मानसिक संतुलन विकसित करके शरीर के पोस्चर में सुधार लाता है, जांघों, घुटनों और टखनों को मजबूत करता है। ताड़ासन करने के लिए आपको सीधे खड़े होकर अपने दोनों हाथों को ऊपर ले जाते हुए एक दूसरे से जोड़ना है। इसके बाद अपनी एड़ियों के सहारे ऊपर की तरफ बॉडी को स्ट्रेच करें। इसी अवस्था में अपना संतुलन बनाने की कोशिश करें। इसी प्रक्रिया को चार से पांच बार दोहराएं। इससे आपकी पूरी बॉडी को काफी राहत फील होगी।

# खुशहाल शादीशुदा जिंदगी के लिए फॉलो करें ये रूल

शादीशुदा जिंदगी को खुशहाल तरीके से बिताना दिन पर दिन मुश्किल होता जा रहा है। अक्सर पार्टनर की हाई एक्सपेक्टेशन की वजह से दूसरे पार्टनर के लिए शादी को निभाना ज्यादा कठिन लगता है, लेकिन शादी के बाद पार्टनर को दिया थोड़ा सा वक्त भी खुशहाल रिलेशनशिप की चाबी बन सकता है। जैसे कि अगर आपका पार्टनर केवल इसलिए नाराज रहता है कि उसे आप वक्त नहीं देते, तो 2-2-2 का रूल लाइफ में लागू करें। नए शादीशुदा जोड़े हो या फिर शादी पुरानी हो चुकी है। इस रूल को लागू करने के साथ ही जिंदगी में आ रही नीरसता खत्म होगी और लाइफ में खुशियां बढ़ेंगी। खुशहाल शादीशुदा जिंदगी के लिए फॉलो करें ये रूल

आजकल सोशल मीडिया पर काफी सारी चीजों का ट्रेंड चलता है। इसी में से एक ट्रेंड 2-2-2 रूल का है। जिसमें बताया गया है कैसे शादीशुदा जिंदगी को इस रूल की मदद से खुशहाल बनाया जा सकता है।

**हर 2 हफ्ते पर जाएं डेट पर**
पार्टनर के लिए थोड़ा वक्त निकालें और हर दो सप्ताह पर डिनर या लंच डेट पर जरूर जाएं। मूवी डेट भी गुड ऑप्शन है। कुछ देर साथ में बैठने से मन में आ रही गलतफहमियों को दूर करने में मदद मिलेगी।

**दो महीने पर करें वीकेंड एंज्वॉय**
दो महीने के बाद किसी एक वीकेंड पर शहर के आसपास घूमने जाएं। जहां दो दिन बिना किसी टेंशन और सोच के एक दूसरे के साथ समय बिताएं। ऐसा करने से आपको एक दूसरे के लिए पर्याप्त समय मिलेगा और गलतफहमियां पनपने से पहले ही खत्म हो जाएगी।

**2 साल पर प्लान करें पूरा वीक**
हर दो साल के बाद पूरा एक सप्ताह साथ बिताएं। फैमिली, बिजनेस, कैरियर, बच्चे जैसी चिंताओं को छोड़कर खुद के लिए समय निकालें और एक दूसरे की पसंद-नापसंद के बारे में सोचें। ऐसा करने से शादीशुदा जिंदगी को खुशहाली के साथ निभाना आसान हो जाता है और एक दूसरे के लिए मन में प्यार भी बढ़ता है।

# सर्दियों में गर्मा-गर्म **पाया सूप** पीने के 5 फायदे

सर्दियां शुरू होते ही मन कुछ चटपटा, तीखा और गर्मा-गर्म खाने का करने लगता है। अपनी इस क्रेविंग को पूरा करने के लिए लोग कई बार जंक फूड का सहारा लेते हैं, लेकिन आज आपको विंटर स्पेशल एक ऐसी खास चीज बताने जा रहे हैं, जो ना सिर्फ टेस्टी होने के साथ आपकी क्रेविंग को शांत करेगी बल्कि सेहत और खूबसूरती से जुड़े कई फायदे भी देगी। जी हां, इस जादुई चीज का नाम है पाया का सूप। मिनरल्स और विटामिन से भरपूर पाया का सूप शरीर में गर्माहट बनाए रखने के साथ सर्दी-जुकाम और मोटापा को भी दूर रखने में मदद करता है। आइए जानते हैं पाया का सूप पीने से सेहत को मिलते हैं क्या फायदे।

**मजबूत हड्डियां**
पाया सूप में मिनरल्स, फास्फोरस, मैग्नीशियम, कैल्शियम, सोडियम, फ्लोराइड और पोटेशियम जैसे पोषक तत्वों की अच्छी मात्रा मौजूद रहती है। जिससे हड्डियां मजबूत बनी रहती हैं।

**वेट लॉस**
इस सूप में कैलोरी की मात्रा काफी कम और जिलेटिन की मौजूदगी पेट को लंबे समय तक भरा रखकर भूख को कंट्रोल करने में मददगार है। एक्सपर्ट की मानें तो नियमित रूप से पाया सूप का सेवन करने से वजन को कम किया जा सकता है।

**सूजन करें कम**
पाया सूप के पीने से शरीर की सूजन को कम किया जा सकता है। बोन ब्रोथ में मौजूद एमिनो एसिड सूजन को कम करने में फायदेमंद हो सकता है। इसके अलावा इसमें मौजूद एल-ग्लूटामाइन आंतों की सूजन को कम करने में आपकी मदद करता है।

**सर्दी-जुकाम से राहत**
पाया सूप में एंटी-इंफ्लामेटरी गुण पाया जाता है, जो सर्दी के लक्षणों को कम करने में आपकी मदद करता है।

**ग्लोइंग स्किन**
पाया सूप पीने से त्वचा पर निखार आता है। पाया सूप में मौजूद कोलेजन और यलुरोनिक एसिड त्वचा की लोच बढ़ाकर झुर्रियों की समस्या को कम करने में मदद करते हैं।

# ठंड के मौसम में बच्चों की मालिश के उपाय

मालिश एक साल से कम उम्र के बच्चों के लिए बहुत जरूरी होती है। इससे बच्चे रिलैक्स फील करते हैं और साथ ही उनकी ग्रोथ भी होती है, लेकिन ठंड के मौसम में कई बार न्यू मॉम मालिश को लेकर कंफ्यूज हो जाती हैं। या तो वो मालिश अवॉएड करने लगती हैं या फिर कुछ ऐसी गलतियां करती हैं कि बच्चे को ठंड लग जाती है और वो बीमार हो जाता है। न्यू बॉर्न बेबी घर में हैं तो मालिश से जुड़ी इन छोटी बातों को जरूर ध्यान में रखें। इस बारे में विशेषज्ञों के अनुसार छोटे बच्चों की मालिश करते वक्त इन बातों का ध्यान जरूर रखें

**तेल को हल्का गर्म कर लें**
मालिश के लिए हमेशा तेल को हल्का सा गुनगुना कर लें। जिससे बच्चे के शरीर पर लगाने से ठंड ना महसूस हो।

**बच्चों के कपड़े ना निकालें**
मालिश के लिए बच्चों के कपड़े उतारना जरूरी होता है, लेकिन ठंड के मौसम में भूलकर भी ऐसा ना करें। पूरा कपड़ा या ऊनी कपड़ा निकालकर मालिश करना बच्चे के लिए हार्मफुल हो सकता है। बच्चे को ठंड लग सकती है। हमेशा पूरे कपड़े पहने हुए बच्चे के कपड़े के अंदर हाथ डालकर तेल लगाना चाहिए और मालिश करनी चाहिए।

**हाथों को जरूर कर लें गर्म**
मालिश करने से पहले थोड़ा सा तेल हाथों पर लगाकर पहले खुद के हाथों को जरूर गर्म कर लें। जिससे ठंडे हाथ की वजह से बच्चे को डिसकंफर्ट ना महसूस हो।

**कमरे का तापमान मेंटेन करें**
मालिश शुरू करने से पहले कमरे में हवा के सोर्स को बंद करने के साथ हीटर या ब्लोअर जलाकर टेंपरेचर को नॉर्मल करें। हीटर जलाने के साथ ही कमरे के मॉइश्चर को भी मेंटेन कर लें। जिससे बच्चे को दिक्कत ना हो। साथ ही ठंड लगने का खतरा ना हो।

## संक्षिप्त समाचार

### व्यक्ति की आत्मा को उजागर करके उसे ध्यान में एकाग्र करने का मार्ग दिखाता हैं कबीर अमृतवाणी : सुश्री चंद्रकला साहेब

**सत्पथ पर अग्रसर होने में भरपूर सहायता मिलती है कबीर अमृतवाणी से : रंजना साहू**

**ब्यूरों सैय्यदा मुनीजा़ हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़।** धमतरी- ग्राम बिरेतरा में सुश्री चंद्रकला साहेब जी के मुखार विन्द से कबीर साहेब जी के सत्संग श्रवण का सौभाग्य लेने भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू पहुंची। इस अवसर में सर्वप्रथम साध्वी जी का सम्मान कर आशीर्वाद लिए। सुश्री चंद्रकला साहेब जी ने सत्संग में कहा कि कबीर के अनुसार, गुरु का महत्व जीवन में अत्यधिक है, क्योंकि व्यक्ति की आत्मा को उजागर करके उसे ध्यान में एकाग्र करने का मार्ग दिखाते हैं। गुरु के प्रेरणास्त्रोत से व्यक्ति मानसिक और आध्यात्मिक विकास की दिशा में आगे बढ़ सकता है। पूर्व विधायक श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू ने ग्रामवासियों को धर्म के प्रचार प्रसार के लिए लगातार किये जा रहे धार्मिक आयोजन के किये बधाई देते हुए कहा कि संत कबीर साहेब जी ने सभी धर्मों का आदर करते हुए सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास रखते थे, उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांडों, अंधविश्वासों से लोगों को जागरूक किए, संत कबीरदास जी सदैव शांतिमय जीवन, अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक रहे हैं एवं अपने अनुयायियों को इस मार्ग पर चलने के प्रेरित किए हैं, कबीर अमृतवाणी श्रवन करने से मन-मस्तिष्क में बैठी परस्पर विरोधी धारणाओं को सुलझाने तथा सत्पथ पर अग्रसर होने में भरपूर सहायता मिलती है। इस अवसर पर मुख्य रूप से जनपद सदस्य जागेश्वरी साहू, सरपंच श्रीमती उषा भीखम साहू, उपसरपंच विनेश्वर साहू, बसंत राम साहू, बिहारी राम साहू, सेवाराम साहू, पारथ राम साहू, खिलावन साहू, ग्राम पटेल सिरा सिंह साहू, नरेंद्र कुमार, कंशुराम साहू, चितेरी राम, बलदेव साहू, संतु साहू, अलखराम सेन, हेमंत, झूमुख साहू ,रमेश साहू, टीकाराम साहू, नूतन साहू, परसराम साहू, अजीत साहू, मोहन यादव, शरद साहू, शिव नारायण साहू, वीरेंद्र पटेल, मेवाराम साहू, सुमित्रा ध्रुव, कल्याणी साहू, कामिनी साहू, योगिता यादव, सोना बाई तारक, दशरी बाई, शांति तारक, ओमान लाल निर्मलकर, प्रीतम साहू सहित कबीर सत्संगी व ग्रामीण उपस्थित रहे।

### धमतरी पुलिस,थाना दुगली द्वारा ग्राम केकराखोली कलामंच के पास खड़खड़िया खेलाते जुआरी के विरुद्ध की गई वैधानिक कार्यवाही

**ब्यूरों सैय्यदा मुनीजा़ हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़।** धमतरी शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में हो रही जुआ/सट्टा पर अंकुश लगाने हेतु पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा जुआ/सट्टा पर कार्यवाही करने के आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये हैं। जिस पर धमतरी पुलिस थाना दुगली द्वारा जुआ/सट्टा खेलाने वालों की पतासाजी की जा रही थी। तभी मुखबिर से सूचना मिली की थाना दुगली क्षेत्रान्तर्गत ग्राम केकराखोली कलामंच के पास आम जगह पर फड़ में विभिन्न चिन्हो,प्रतीकों तस्वीरों में लोगों से रूपये पैसे हारजीत का दांव लगाकर खड़खड़िया नामक जुआ/सट्टा खेला रहा है कि सूचना पर घेराबंदी कर एक व्यक्ति को पकड़ा गया जो खड़खड़िया खेला रहा था बाकी खेलने वाले लोग पुलिस को आते देखकर भाग गए, पकड़े गए व्यक्ति से नाम पता पूछने पर अपना नाम तरूण कुमार निर्मलकर पिता संतोष निर्मलकर उम्र 25 वर्ष साकिन जामगांव थाना नरहरपुर जिला कांकेर (छ.ग.) का रहने वाला बताये जिसके कब्जे से नगदी रकम 6000/- रुपये एवं फड़ से 2,250/- रूपये कुल 8,250 रूटये एवं खडखड़िया खेलाने का सामग्री एक प्लास्टिक फ्लैक्स फड़ (बिसात), 06 नग चौकोर गोंटी जिसमें चौकोर नुमा ईट,पान, हुकुम, चिड़ी, झण्डा,मुंडा बना हुआ एवं एक नग टोकरी जप्त कर जुआरी के विरूद्ध थाना दुगली में अप0 क्र0 03/25 धारा 6 (क) छ0ग0 जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 कायम कर विधिवत् कार्यवाही की जा रही है।

**जुआरी का नाम :**-तरूण कुमार निर्मलकर पिता संतोष निर्मलकर उम्र 25 वर्ष साकिन जामगांव थाना नरहरपुर जिला कांकेर (छ.ग.)

# अभ्यारण अंचल से रामकुमार थुरिया की दावेदारी को मिल रहा जन समर्थन

**सारंगढ़ ( समय दर्शन )।** नव गठित जिला सारंगढ़ बिलाईगढ़ के पहले जिला पंचायत सदस्य के लिए क्षेत्र क्रमांक 9 अनारक्षित मुक्त होने पर दिग्गजों की नज़र इस सीट पर है जिला पंचायत अध्यक्ष के आरक्षण भी सामान्य होने पर भाजपा एवं कांग्रेस के कई कद्दावर नेता अपनी नज़र इस जिला पंचायत क्षेत्र में रखे हुए हैं वनांचल के दो भागों को जोड़कर एक जिला पंचायत क्षेत्र बनाया गया है क्षेत्रफल एवं ग्राम पंचायत की संख्या की दृष्टि से जिले का सबसे बड़ा जिला पंचायत क्षेत्र है जिसमें ग्राम पंचायत खम्हारपाली दबगांव घठोरा सराईपाली अचानकपाली कनकबीरा रामटेक बैगिनडीह सालर बटाउपाली बोईरडीह दानसरा चवरपुर भवरपुर के साथ ही सहसपानी गंजाईभौना भड़ीसार खर्री छोटे केड़ार रापागुला सहित 31 पंचायतें हैं जो गोमर्डा क्षेत्र की सीमा से जुड़े हैं इन क्षेत्रों की समस्याएं लगभग समान हैं जिनकी समस्याओं को लेकर रामकुमार थुरिया जो सामान्य परिवार से होते हुए भी अपने क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को लेकर हमेशा आवाज उठाते हुए लोगों के साथ खड़े होकर अग्रणी भूमिका निभाते हैं इन सभी गांव के महिला पुरुष एवं बच्चे तक रामकुमार थुरिया से लगाव है वहीं भारतीय जनता पार्टी संगठन में सक्रियता से पूर्व वे सालर क्षेत्र में आचार्य के रूप में सैकड़ों बच्चों को एवं पालकों के बीच गहरी पैठ भी है साथ ही पत्रकारिता के क्षेत्र में भी स्वच्छ छवि के साथ कई समस्याओं के समाधान का दमखम का लोहा भी मनवा चुके हैं आज भी लोग उन्हें एक अच्छे पत्रकार के रूप में ही देखते हैं भारतीय जनता पार्टी में अपनी राजनीति की शुरुवात बूथ कार्यकर्ता के रूप में की और लगातार सक्रियता से बूथ पालक शक्ति केन्द्र संयोजक , शक्ति केन्द्र प्रभारी, युवा मोर्चा महामंत्री,मंडल महामंत्री, विभिन्न कार्यक्रमों के मंडल संयोजक विधानसभा लोकसभा चुनाव में जोन प्रभारी जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर भाजपा संगठन की मज़बूत टीम को खड़ा कर मंडल में पार्टी कार्यकर्ताओं को एका करने में सफ़लता अर्जित किया इन सभी कार्यों को देखते हुए इन्हे भाजपा ने मण्डल सालर मल्दा ब के मण्डल अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति देकर कार्यकर्ताओं को स्पष्ट संदेश दिया की भाजपा में कार्य करने वाले कार्यकर्ता की पहचान होती है वहीं

कार्यकर्ता एवं जिला पंचायत क्षेत्र वासियों का भी पहली पसंद अपने क्षेत्र के स्थानीय युवा रामकुमार थुरिया, डीडीसी प्रत्याशी के रूप में लोगों की पसंद हैं जिनके प्रचार प्रसार के साथ ही साधन संसाधन से सहयोग करने की बात कही जा रही है स्थानीय लोगों का कहना है की रामकुमार कभी अपने स्वार्थ के लिए कार्य नहीं किया है 2016 से अभ्यारण के लोगों को भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से पूर्व अवगत कराकर जन जागरूकता फैलाने का कार्य किया इसके लिए आर्थिक रूप से किसी से कोई सहयोग लिए बिना कई बड़े कार्यक्रम किए गोमर्डा क्षेत्र की जमीन खरीदी बिक्री के पंजीयन न होने की समस्या के साथ ही इन क्षेत्र के लोगों को तेंदूपत्ता संग्रहण से वंचित किए जाने को लेकर छतिपूर्त राशि दिलाने के लिए 2016 में मोर्चा खोलकर अभ्यारणवासी सम्मेलन हाई स्कूल कनकबीरा किया था इनके ही प्रयास से तत्कालीन रमन सरकार ने गोमर्डा अभ्यारण के 28 गांव के प्रत्येक परिवार को छतिपूर्ति राशि मिलना शुरू हुआ था लेकिन छत्तीसगढ़ में सरकार बदली तो यह राशि मिलना बंद हो गया इसकी मांग को लेकर भी रामकुमार थुरिया ने 30 जनवरी 2023 में चक्का जाम का विशाल आयोजन कर सरकार तक क्षेत्रवासियों की समस्याओं को पहुंचाने सफल हुए जिसके फलस्वरूप वर्षों से दबी पड़ी गोमर्डा अभ्यारण निर्माण की फाइल ऊपर आया है हालाकि अब तक अपेक्षित सफलता इस पर नहीं मिल पाया है लेकिन जिन 9 शुत्रीय मांगों को लेकर चक्का जाम किया गया था उसमें से पुलिस चौकी भवन के लिए 41 लाख रुपए की स्वीकृति, कनकबीरा में कन्या छात्रावास के लिए विभागीय प्रस्ताव, वन विभाग द्वारा नरगिखोल के लातनाला में ह्यूम पाइप सह रपटा का प्रस्ताव स्वीकृति हेतु भेजा जाना शामिल है जबकि दो प्रमुख मांग तेंदूपत्ता बोनस राशि एवं जमीन क्रय विक्रय के पंजीयन के साथ ही किसानों को स्थायी बिजली कनेक्शन, वन्य जीवों से फसल नुकसान पर तत्काल प्रकरण स्वीकृत कराकर भुगतान कराने के लिए किसानों के साथ हमेशा खड़े रहते हैं। जिसके कारण लोगों के बीच लोकप्रिय हैं वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो चक्का जाम करने के बाद भी तेंदूपत्ता की बोनस राशि नहीं मिलने को लेकर उनसे नाराज़ हैं इस पर हमने रामकुमार थुरिया की प्रतिक्रिया लिया तो उन्होंने कहा की यह नाराजगी नही मेरे प्रति उनका विश्वास और भरोसा है अपेक्षित सफलता नहीं मिलने पर मैं भी दुखी हूं लेकिन लोगों को लगता है मैं बड़ा नेता हूं जबकि मैं भी उन्हीं की तरह सामान्य आम नागरिक हूं जब तक इस क्षेत्र के निर्वाचित जनप्रतिनिधि नही बनेंगे तब तक अपने वनांचल क्षेत्र का विकास एवं लोगों को सुविधाएं नहीं मिलेगी अब तक मैं अपने क्षेत्रवासियों के हक के लिए उनके साथ खड़ा होकर लड़ता रहा हूं आगे भी हमारी लड़ाई जनहित में जारी रहेगी।

# विकासखंड स्तरीय जवाहर नवोदय प्रवेश परीक्षा के लिए 42 विद्यार्थियों को दिया गया नि:शुल्क कोचिंग

**गरियाबंद ( समय दर्शन )।** कलेक्टर दीपक अग्रवाल के निर्देशानुसार जिले में गौरव गरियाबंद अभियान चलाया जा रहा है।इसके तहत विकासखंड स्तरीय जवाहर नवोदय प्रवेश परीक्षा 2025 के लिए नि:शुल्क कोचिंग का आयोजन किया गया। जिसमें गरियाबंद विकासखंड के 42 छात्र-छात्राओं ने 15 दिनों तक कोचिंग प्राप्त किया।विकासखंड गरियाबंद में शिक्षा के क्षेत्र मे एक नया प्रयोग करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी ए.के.सारस्वत के मार्गदर्शन में विकासखंड शिक्षा अधिकारी गजेंद्र ध्रुव द्वारा नवाचार किया गया।साथ ही कक्षा 6वीं जवाहर नवोदय प्रवेश परीक्षा 2025 हेतु विकासखंड स्तरीय नि:शुल्क कोचिंग 1 जनवरी से प्रारम्भ किया गया था।जिसका आज समापन किया गया।इस दौरान संयुक्त कलेक्टर राकेश गोलछा ने नवोदय प्रवेश परीक्षा के लिए छात्र-छात्राओं को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि इस नि:शुल्क कोचिंग से निश्चित ही आप लोगों को फायदा मिलेगा तथा यहां आप लोगों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अच्छा माहौल मिला है।उन्होंने नवोदय विद्यालय में चयन उपरांत मिलने वाली पढ़ाई,रहने,खेलकूद,सांस्कृतिक गतिविधियां सहित अन्य सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इससे पूर्व 1 जनवरी 2025 को कोचिंग का शुभारंभ रायपुर के सहायक संचालक अजीत कुमार जाट ने करते हुए इस कोचिंग की सराहना करते हुए शुभकामनाएं दीं। 15 दिवस तक चले इस नि:शुल्क कोचिंग में मार्गदर्शन देने जिला शिक्षा अधिकारी ए.के सारस्वत,जिला मिशन समन्वयक के.एस.नायक, जिला परिवहन अधिकारी रविन्द्र ठाकुर, जिला नोडल गौरव गरियाबंद श्याम चंद्राकर, सहायक नोडल मनोज केला, तहसीलदार मयंक अग्रवाल, स्त्रोत समन्वयक तेजेश शर्मा के साथ हो जवाहर नवोदय विद्यालय पाण्डुका से शिक्षकगण विशेष रूप से उपस्थित हुए।कोचिंग को सफल बनाने में कृष्ण कुमार बया,मनोज चंद्राकर एवं समस्त संकुल समन्वयक, पुनारद राम निषाद,डगेश्वर क्षत्री,मनोज साहू एवं शिक्षकगणों का विशेष सहयोग रहा।

# सुपोषण चौपाल में गोद भराई कार्यक्रम आयोजित

**गर्भवती माताओं और बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य और खानपान की जानकारी के लिए पहल**

**महासमुंद ( समय दर्शन )।** आंगनबाड़ी केन्द्रों में सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम अंतर्गत गर्भवती महिलाओं, शिशुवती माताओं एवं किशोरी व बच्चों को कुपोषण से मुक्त करने सुपोषण चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। महासमुंद के शहरी सेक्टर विश्वकर्मा नगर के आंगनबाड़ी केन्द्र में आज सुपोषण चौपाल का आयोजन किया गया। जिसमें गर्भवती माता निशा सिक्का की गोदभराई का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सेक्टर सुपरवाइजर शीला प्रधान ने गर्भवती माताओं के खानपान और स्वास्थ्य संबंधी आदतों को अपने व्यवहार में अपनाने प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि यह महत्वपूर्ण समय होता है जिसमें स्वयं के साथ आने वाले बच्चे के स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना होता है। उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी भी दी। प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना के तहत मिलने वाली राशि तथा महतारी वंदन योजना की जानकारी दी गई। उल्लेखनीय है कि सुपोषण चौपाल में गर्भवती महिलाओं और बच्चों को पोषण से जुड़ी जानकारी दी जाती है, साथ ही कुपोषित बच्चों के वज़न में बढ़ोतरी के लिए उपाय भी बताए जाते हैं। सुपोषण चौपाल में गोदभराई, अन्नप्राशन, जन स्वास्थ्य दिवस, पोषण और स्वास्थ्य से सलाह, परामर्श के साथ ही कुपोषित बच्चों के माता-पिता को सही खान-पान, बच्चों को टीकाकरण कराना और स्वच्छता के बारे में जानकारी दी जाती है। इस दौरान आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अंजू चंद्राकर सहित आसपास की महिलाएं उपस्थित थी।

# कलेक्टर विनय लंगेह ने कृषि और पी डब्ल्यू डी कार्यालय का किया औचक निरीक्षणो

**सुबह 10 पहुंच कर ली हाजिरी, अनुपस्थित अधिकारी-कर्मचारियों को मिलेगा नोटिस**

**कृषि में 1 और पी डब्ल्यू डी में 6 कर्मचारी समय पर नहीं पहुंचे**

**एक दिन का वेतन काटने के निर्देश, प्रशासनिक कसावट का दिखने लगा असर**

**महासमुन्द, ( समय दर्शन )।** कलेक्टर विनय कुमार लंगेह ने आज सुबह ठीक 10 बजे कृषि विभाग पहुंचकर कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। कलेक्टर ने उपस्थिति पंजी मंगाकर खुद कर्मचारियों की हाजिरी ली और अनुपस्थित कर्मचारी योगेन्द्र वर्मा को नोटिस देने के निर्देश दिए। इस दौरान कृषि उपसंचालक एफ आर कश्यप और अन्य कर्मचारी मौजूद थे। कृषि उपसंचालक ने बताया कि निर्देशानुसार सभी अधिकारी कर्मचारी को समय पर कार्यालय आने के निर्देश दिए गए है जिसका पालन किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत सीईओ एस. आलोक भी मौजूद थे। तत्पश्चात कलेक्टर लंगेह ने लोक निर्माण विभाग का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान कार्यालयों में उपस्थिति, कार्यप्रणाली और जनसेवा से जुड़े कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान यहां कार्यालयीन समय में 6 कर्मचारी समय पर अपनी ड्यूटी से अनुपस्थित पाए गए, जिनमें लोचन दास, पोषण ध्रुव, अंजली सोनवानी, अमित कुर्रे और ज्ञानेश ठाकुर, हेमलाल कोसरे शामिल है। कलेक्टर ने दैनिक उपस्थिति पंजी लेकर स्वयं हाजिरी ली अनुपस्थित कर्मचारियों को नोटिस देने और एक दिन का वेतन काटने के निर्देश कार्यपालन अभियंता चंद्राकर को दिए हैं। उन्होंने सभी कर्मचारियों को दैनिक उपस्थिति पंजी में आते ही हस्ताक्षर करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि शासन की मंशानुरूप समय पर कार्यालय पर पहुंचे और जनता को आवश्यक सेवाएं सुलभता से प्रदान करें। उन्होंने कहा कि सरकारी कार्यों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और आवश्यकतानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही भी की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि एक सप्ताह पूर्व भी कलेक्टर द्वारा एनआईसी, अपर कलेक्टर, चिप्स, निर्वाचन शाखा, स्थापना शाखा, कोषालय, खाद्य, भू-अधीक्षक, आदिवासी, आबकारी, खनिज सहित कलेक्ट्रेट के सभी शाखाओं का निरीक्षण कर उपस्थिति पंजी का अवलोकन किया गया था। जिसमें अनेक अधिकारी कर्मचारी को नोटिस दिया गया था।

# स्कूलों के बच्चों तथा ग्राम पंचायत स्तर हितग्राहियो का आयुष्मान पंजीयन तथा अभियान के लिए दिया गया प्रशिक्षण

**सारंगढ़ ( समय दर्शन )।** केंद्र सरकार की महत्वकांक्षी और जनकल्याणकारी योजनों मे से एक योजना है आयुष्मान भारत योजना इस योजना से आज गरीब तबके के लोगो के लिए संजीवनी बूटी से कम नहीं जिसमे मुफ्त इलाज का लाभ उठा रहे सरकार और प्रशासन की मनसा है की इसका लाभ निचले से निचले स्तर तक पहुचे उसके लिए लगातार काम कर रही है इस योजना से कोई वंचित ना हो उसके लिए भी प्रशासन जिला स्तर से लेकर ब्लाक स्तर तक काम कर रही और योजनों को जनता तक सुचारु रुप से पहुंचाया जा सके उसके लिए भी लगातार विभागीय प्रशिक्षण जारी है उसी कड़ी मे आज 15.01.2025 एस. डी. एम. बिलाईगढ़ वर्षा बंसल के निर्देशानुसार तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एफ आर. निराला सर के मार्गदर्शन में तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत विकाशखण्ड बिलाईगढ़ के सहयोग से समस्त शैक्षणिक समन्वयक (शिक्षा विभाग) एवं समस्त रोजगार सहायक ,आवास मित्र ,बिहान समूह की महिलाएं को आयुष्मान पंजीयन हेतु प्रशिक्षण दिया गया यह प्रशिक्षण बिलाईगढ़ जनपद सभा कछ में दिया गया जिसमें सभी स्कूलों

के बच्चों एवम ग्राम पंचायत स्तर पर आयुष्मान पंजीयन अभियान चलाने को लेकर बताया गया इस प्रशिक्षण मे आयुष्मान पंजीयन करने की विधि और आने वाली परेशानियों को कैसे दूर किया जाये तमाम मुद्दों को लेकर आयुष्मान जिला सलाहकार रोशन सचदेव द्वारा प्रशिक्षण दिया गया

# संभागायुक्त ने ली मल्टी सुपर स्पेश्यालिटी प्रबंधन की बैठक

**आईपीडी सुविधा जल्द शुरू करने दिए निर्देश, धीमी कार्य प्रगति पर जतायी नाराजगी**

**बिलासपुर ( समय दर्शन )।** संभागायुक्त महादेव कावरे ने कोनी स्थित सिम्स मल्टी सुपर स्पेश्यालिटी अस्पताल प्रबंधन की बैठक ली। उन्होंने अस्पताल में मरीजों की भर्ती कर इलाज करने की सुविधा (आईपीडी) विकसित करने में हो रहे विलंब पर गहरी नाराजगी जाहिर की। जल्द से जल्द वार्डों में जरूरी आंतरिक सुधार सहित उपकरणों की खरीदी का कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। श्री कावरे ने स्वास्थ्य विभाग की उपकरण खरीदी करने वाली एजेन्सी (हाईट्स) के दिल्ली स्थित बड़े अधिकारियों को भी चेताया। कलेक्टर अवनीश शरण एवं चिकित्सा अधीक्षक सह संचालक भानुप्रताप सिंह सहित कार्य एजेन्सियों के जिम्मेदार अधिकारी बैठक में शामिल हुए।

उल्लेखनीय है कि अस्पताल के भवन निर्माण का कार्य केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग एवं मेडिकल उपकरण की खरीदी का जिम्मा हाईट्स नामक एजेन्सी

को है। श्री कावरे ने बैठक में उनके काम-काज की समीक्षा की। उन्होंने अस्पताल में लैब का काम 15 फरवरी तक और ब्लड बैंक का काम 15 मार्च तक हर हाल में पूर्ण करने को कहा है। केन्द्रीय पीडब्ल्यूडी के इंजीनियर ने लाण्ड्री, मार्चुरी भवन और बायोमेडिकल वेस्ट भवन निर्माण के लिए अलग से बजट की जरूरत बताई। संभागायुक्त ने कहा कि प्रस्ताव बनाकर जल्द स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग भिजवाएं ताकि बजट स्वीकृत कराया जा सके। मेडिकल उपकरण की आपूर्ति में हो रहे विलंब पर भी स्थानीय अधिकारियों को फटकार लगायी गई। अस्पताल में डायलिसीस, कैथलैब एवं हार्टलंग मशीनें अभी तक उपलब्ध नहीं कराई गयी हैं। कुछ उपकरणों की अधूरी आपूर्ति की जानकारी भी सामने आई। चिकित्सा अधीक्षक ने बताया कि सुपर स्पेश्यालिटी अस्पताल में हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ अभिषेक कुमार ने ज्याइनिंग दी है। उन्होंने बताया कि फ्लिहाल यूरोलाजी, न्यूरोसर्जरी, पल्मोनरी एवं जनरल मेडिसिन में ओपीडी सेवाएं चालू हैं। अब हृदय रोग संबंधी ओपीडी भी जल्द शुरू हो जायेगी। प्रतिदिन लगभग 50 मरीजों का ओपीडी उपचार किया जा रहा है।

## खबर-खास

### होंडा मोटरसाइकिल एण्डम स्कूटर इंडिया ने लॉन्च की नई CB650R और CBR650R, प्रीमियम मोटरसाइकिल सेगमेंट में बढ़ाया कदम 'बुकिंग शुरू हो चुकी है'

**रायपुर:** होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (एचएमएसआई) ने अपनी प्रीमियम मोटरसाइकिल रेंज में दो नए मॉडल CB650R और CBR650R लॉन्च किए हैं। ये दोनों बाइक स्टाइल और परफॉर्मेंस का बेहतरीन मिश्रण पेश करते हुए मोटरसाइकिल प्रेमियों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करेंगी। ग्राहक अब इन नई बाइक्स को अपने नजदीकीबिगविंग डीलरशिपपर बुक कर सकते हैं। इनकी डिलीवरी फरवरी 2025 से शुरू होगी।होंडा के ये नए मॉडल निश्चित रूप से प्रीमियम बाइकिंग के क्षेत्र में एक नया बेंचमार्क स्थापित करेंगे। इस लॉन्च पर एचएमएसआई के मैनेजिंग डायरेक्टर, प्रेसिडेंट और सीईओत्सुत्सुमु ओटानीने कहा,' 'हमें भारत में CB650R और CBR650R के नए एडिशन लॉन्च करने की खुशी है। भारत में प्रीमियम मोटरसाइकिल सेगमेंट तेजी से बढ़ रहा है,और हाई परफॉर्मेंस वाली,एडवांस्ड टेक्नोलॉजी से लैस बाइक्स की मांग बढ़ रही है। एचएमएसआई में हम ग्राहकों की इन आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विश्व स्तरीय प्रोडक्ट्स लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमें भरोसा है कि ये नई बाइक्स प्रीमियम मोटरसाइकिलिंग के अनुभव को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगी। इस लॉन्च पर अपनी बात रखते हुए,होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (एचएमएसआई) के सेल्स और मार्केटिंग डायरेक्टरयोगेश माथुरने कहा, CB650R और CBR650R को लॉन्च करते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है। ये मोटरसाइकिलें उन प्रीमियम ग्राहकों के लिए बनाई गई हैं, जो बेहतरीन परफॉर्मेंस,एडवांस्ड तकनीक और स्टाइलिश डिजाइन को प्राथमिकता देते हैं।

### रॉयल स्टैग बूमबॉक्स-अपने तीसरे संस्करण के साथ लेकर आ रहा है अनुभवात्मक संगीत समारोह

**मुंबई:** सीग्राम रॉयल स्टैग बूमबॉक्स अपने तीसरे संस्करण के साथ वापस आ रहा है, जो समकालीन हिप-हॉप बीट्स के साथ बॉलीवुड की प्रतिष्ठित धुनों को एक अद्भुत मिश्रण पेश करेगा। मिर्ची द्वारा निर्मित इस सीजन के साथ, प्रभावी संगीत समारोह 14 जनवरी, 2025 को मुंबई में एक विशेष मीडिया ब्रीफिंग में अपने आगामी लाइनअप का प्रदर्शन किया जाएगा. यह अनूठा सांस्कृतिक फ्यूजन पारंपरिक और आधुनिक भारतीय संगीत के मिश्रण को फिर से परिभाषित करना जारी रखेगा, जो ब्रांड के 'लिविंग इट लार्ज'दर्शन के अनुरूप है। ब्रांड के लिए उपभोक्ताओं के साथ सीधे जुड़ने का संगीत एक प्रमुख स्तंभ है। रॉयल स्टैग बूमबॉक्स हिप-हॉप की रॉ एनर्जी के साथ बॉलीवुड की कालातीत धुनो को एक साथ लाता है, जो आज की पीढ़ी के लिए जनरेशन लार्ज की मूल ध्वनि का निर्माण करता है।

## निधन समाचार

**गरियाबंद।** नगर के वार्ड न.1 निवासी स्वर्गीय श्री गिरधर ठाकुर की धर्मपत्नी श्रीमती महेश्वरी ठाकुर उम्र 48 वर्ष का 16 जनवरी दिन गुरुवार को स्वर्गवास हो गया है,वे पंकज ठाकूर लीना,पायल ठाकुर की माता थी उनका अंतिम संस्कार स्थानीय मुक्तिधाम गरियाबंद में 11 बजे किया गया जिसमें नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

# स्वनिधि योजना से पति के सपनों को उर्मिला साकार कर रही है

**अपने परिवार को दे रही है खुशियां**

**महासमुंद ( समय दर्शन )।** कोरोना महामारी ने न जाने कितने छोटे व्यापारियों की आजीविका छीन ली। कई लोग इस महामारी की चपेट में काल कवलित भी हो गए। ऐसी ही एक कहानी है महासमुंद के स्व. मिट्ठू बेहरा और उनकी पत्नी श्रीमती उर्मिला बेहरा की, दोनों ने अपने परिवार की खुशियों का सपना साथ देखते हुए एक छोटी जूता-चप्पल की दुकान खोली। यह कहानी न केवल एक व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति की मिसाल है, बल्कि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के दूरगामी प्रभाव का प्रमाण भी है। महासमुंद हाईस्कूल के सामने जूते-चप्पल बेचकर मिट्ठू बेहरा अपने छह सदस्यों के परिवार का पालन-पोषण करता था। सीमित आय के बावजूद, वह अपने परिवार की हर जरूरत पूरी करने के लिए मेहनत करता रहा। लेकिन महामारी और लॉकडाउन के दौरान दुकानें बंद हो गईं। आय का स्रोत खत्म हो गया और नई सामग्री खरीदने के लिए धन की कमी ने उसकी मुश्किलें और बढ़ा दी। तभी मिट्ठू को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का पता चला। उसने नगर पालिका कार्यालय में आवेदन किया और जल्द ही उसे एसबीआई बैंक से 10,000 रुपए का ऋण मिला। इस छोटी सी रकम ने मिट्ठू के व्यापार

को पुनर्जीवित कर दिया। उसने अपनी दुकान में नई वैरायटी और सामग्री जोड़ी। बिक्री धीरे-धीरे बढ़ी, और उसकी प्रतिदिन की आय 300 से 500 रुपए तक पहुंच गई। इन सब कार्यों में उर्मिला बेहरा साएं की तरह साथ रही और उनके सपनों को पूरा करने में मेहनत में कोई कसर नहीं छोड़ी।

ऋण मिलने के बाद, मिट्ठू ने सबसे पहले अपने परिवार की आवश्यक जरूरतों को पूरा किया और पुराने कर्ज चुकाए। उसने अपनी दुकान को नए सिरे से खड़ा किया। मिट्ठू की मेहनत रंग लाई, और उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा। लेकिन 2022 में, किस्मत ने करवट ली, और उनकी असामयिक निधन हो गया। मिट्ठू के गुजर जाने के बाद उसकी पत्नी उर्मिला बेहरा ने हिम्मत नहीं हारी। उसने अपने पति के सपने को जिंदा रखते हुए दुकान की जिम्मेदारी संभाली। उर्मिला की मेहनत और दूरदर्शिता ने दुकान को और सफल बना दिया। आज वह अपने परिवार की आर्थिक जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ अपने माता-पिता के इलाज और बच्चों की पढ़ाई के लिए धनराशि जोड़ रही है। उर्मिला न केवल अपने परिवार की ताकत बनी, बल्कि अन्य पथ विक्रेताओं के लिए प्रेरणा भी। उसने स्वनिधि योजना का महत्व समझाते हुए कई अन्य विक्रेताओं को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उर्मिला ने इस योजना और प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इसे अपने जीवन की पुनरुद्धार यात्रा का अहम हिस्सा बताया। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना ने न केवल एक परिवार की आर्थिक स्थिति बदली, बल्कि समाज के अन्य वंचित वर्गों के लिए भी उम्मीद की किरण साबित हुई।

# बिल से निकले चुनावी मेंढक को सोच समझ कर वोट देना देवभोग की जनता

**ओमप्रकाश बघेल**

**देवभोग ( समय दर्शन )।** पंचायत व नगर पंचायत चुनाव के आरक्षण आ चुके हैं और साथ ही पुराने जनप्रतिनिधियों द्वारा किए गए वादो की पोटली खाये जा चुके हैं। रोज सुबह की तरह आज भी देवभोग की हवा सर्द और थोड़ी नरम हो चली थी। मार्निंग वाक पर निकले कुछ लोग चहलकदमी करते नजर आ रहे थे।कुछ चाय की दुकान खुली थी तो वहीं कुछ नाश्ते के दुकान खुले दिखे।बाइक से सरसराते हुए कुछ लोग बैट बाल पकड़ कर निकल रहे थे।भीड़ो का भीड़ चाय दुकान पर दिखी जाने क्या काम रहा होगा जो सुबह की चाय तक घर पर नहीं पी पाये होंगे। तब समझ आया कि चुनाव आ चूका है और चुनावी मेंढक प्रकट हो चुके हैं वैसे ये वो बरसाती मेंढ़क नहीं है जो आप सोच रहे हैं। बरसाती मेंढ़क की प्रजाति 5000 प्रकार के होते हैं और उनके नाम भी अलग अलग लेकिन चुनावी मेंढक प्रजाति 1और नाम

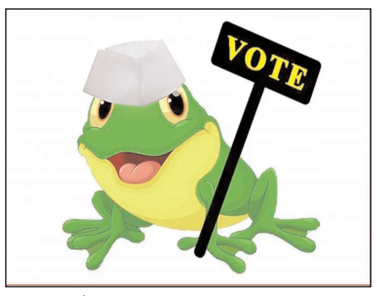


अनेक जैसे जुझारू, समर्पित, जागरूक, जनसेवक, समाजसेवी, दयावान, शक्तिमान अमका,डमका, फ्लाना ना जाने क्या क्या। अब डिजीटल एप से पोस्टर से लेकर वोटरो को कैसे बेवकूफबनाये इनका रोस्टर भी बन चुका होगा। हर 5 मिनट में इस जगह से ये और उस जगह से ये इनके समर्थक इतने और उसके समर्थक इतने इस तरह के मैसेज, चर्चा,फोटो देखने सुनने मिल जायेंगे। लेकिन एक बार चिंतन करना की कहीं आपके पंचायत में भी तो वो गली ,मोहल्ला,नाली नहीं बचा जिन्हे पिछले कार्यकाल में साफहोना था वो सड़क तो अधुरा नहीं रह गया जिसे आजतक बन जाना था वो आँगनबाड़ी भवन तो अधुरा नहीं है जांहा आज हमारे नन्हें बच्चे पड़ते खेलते वो चबुतरा तो नहीं बचा जांहा युवा बुजुर्ग एकत्रित होकर चर्चा करते,वो हैंडपंप तो खराब नहीं जिसके कारण दूर दराज से पीने का पानी लाना पड़ रहा हो, वो सामुदायिक भवन जांहा सामाजिक गतिविधि कर सामाजिक कार्यो को प्रोत्साहित किया जाना हो, शौचालय, नल जल, बिजली, स्कूल, स्वास्थ्य सुविधाएं ,पेंशन, राशन कार्ड जैसे सुविधाओ से कहीं आप वंचित तो नहीं हैं। आपने वोट की जगह नोट लिया और आपके मतदान को उम्मीदवार ने खरीद लिया कारण यही है की आपके सैंकड़ों शिकायतों, मांग के बाद भी आज देवभोग की पवित्र माटी मूलभूत सुविधाओं को तरस रहा है और उसका दंश आप हम सब झेल रहे हैं।और जनप्रतिनिधि ठेकेदारी कर तुम्हें हमेशा खरीदने अपना तिजोरी भर रहे हैं।इस बार एक वोट मूलभूत सुविधाओं के नाम

# नगर पालिका चुनाव बालोद में भाजपा ने कसी कमर

**बालोद-( समय दर्शन )।** नगरीय निकाय चुनाव की दृष्टि से बालोद नगर पालिका के प्रभारी वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन आज बैठक लेने बालोद पहुँचे जहां सर्वप्रथम गंगा मैय्या मंदिर पहुँचकर माँ गंगा मैय्या का आशिर्वाद लिया । मंडल अध्यक्ष अमित चोपड़ा के नेतृत्व में रिकेश सेन जी के बालोद प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओ द्वारा घड़ी चौक बालोद में उनका बाजे गाजे व नारे बाजी के साथ जमकर स्वागत किया वहाँ से कार्यकर्ताओं के साथ पैदल रैली संजारी क्लब स्थित छत्तीसगढ़ महतारी की प्रतिमा पर माल्यर्पण करते हुए कुर्मी भवन बैठक लेने पहुचे सर्वप्रथम बैठक की शुरुवात भारत माता जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी,प.दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रतिमा पर माल्यर्पण कर पूजा की गयी ।

नगरीय निकाय चुनाव बालोद के प्रभारी वैशाली नगर विधायक ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी दिनों में नगरीय निकाय चुनाव होना है आप सभी कमर कस लीजिए इस बार हमें किसी भी स्थिति में बालोद की नगर पालिका की सीट को और पूरे के पूरे 20 वार्डो को जितना है उन्होंने अपना अनुभव भी कार्यकर्ताओ से साझा किया और बताया कि कैसे वो हर बार जहाँ से चुनाव लड़े वहां से जीते, उन्होंने बताया कि आप हमेशा जनता के सुख दुख तकलीफ में उनके साथ खड़े रहिये आपको चुनाव जीतने से कोई नही रोक सकता है ।

जिलाध्यक्ष चेमन देशमुख जी ने कहा कि हमे इस बार बालोद पालिका में कमल खिलाना है अनेक दावेदार है दावेदारी करने का अधिकार सबको है पर पार्टी जिस नाम पर मुहर लगाकर प्रत्याशी बनाये आप सबको मिलकर एक साथ दमदारी से चुनाव लड़ना है और भाजपा का कमल खिलाना है ।

राकेश यादव जी ने बताया कि भाजपा के 2023 के प्रत्याशी के नाते शुक्रगुजार हूं शहर की जनता का जो मुझे पालिका क्षेत्र में अच्छा लीड दिलवाया, साथ ही कहा पार्षद -अध्यक्ष का चुनाव कौन लड़ेगा वो गौण है हमे कमल फूल के लिए काम करना है बताया कि भाजपा को पालिका में जिताओ विकास कार्यो की कमी नही होगी बताया कि हमने अभी 4 करोड़ का कार्य बालोद पालिका क्षेत्र हमने लाया है आगे भी लाएंगे । युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं से कहा कि आगामी चुनाव में आपकी भूमिका अहम होनी चाहिए समय कम है अभी से कमर कस के तैय्यार होना है

बैठक का संचालन मंडल महामंत्री नरेंद्र सोनवानी जी ने किया आभार प्रदर्शन मंडल महामंत्री संतोष कौशिक ने किया ।

इस बैठक में वैशाली नगर विधायक चुनाव प्रभारी रिकेश सेन जिलाध्यक्ष चेमन देशमुख निर्वित्तमान जिलाध्यक्ष पवन साहू बाल संरक्षण आयोग के पूर्व अध्यक्ष यशवंत जैन पूर्व पालिका अध्यक्ष राकेश यादव अल्पसंख्यक प्रदेश महामंत्री शाहिद खान पूर्व मंडल अध्यक्ष द्वय कमलेश सोनी व सुरेश निर्मलकर मंडल अध्यक्ष अमित चोपड़ा भाजपा नेत्री प्रतिभा चौधरी जिला मंत्री शरद ठाकुर,अम्बिका यादव जी,पालक ठाकुर जी,रमन टुवानी,सुरेन्द्र देशमुख जी,महामंत्री संतोष कौशिक, नरेन्द्र सोनवानी,पार्षद राजू पटेल जी,रवि प्रकाश पाण्डेय जी,अकबर तिगाला,रमेश मालेकर जी,कमल पंपालिया,हितेश्वरी कौशिक जी,बंटी बाफ्ना,अजय बाफ्ना,ग्रिजेश गुप्ता,महेश पाठक,समीर खान,पार्षद,सुनील जैन,रौनक कत्याल,छबि सार्वा,प्रीति देशमुख,नीतू सोनवानी,राज सोनी,कमलेश गौतम,राजेन्द्र कानेकर,मन्त्री माधवानी,राहुल साहू,राहुल सोनी,संजय शर्मा,आशुतोष कौशिक,रजत जैन,अभिन्न यादव,प्रशांत चोरड़िया,घासु राम गंधर्व,दयाल बघेल सहित समस्त कार्यकर्ता उपस्थित रहे

# भाजपा का नगरीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव सम्मेलन संपन्न

**योग्य और जितने वाले प्रत्याशी का चयन करें - सांसद रूपकुमारी**

**गरियाबंद ( समय दर्शन )।** बुधवार को जिला भाजपा कार्यालय गरियाबंद में भाजपा का नगरीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव सम्मेलन संपन्न हुआ।सम्मेलन में कार्यकर्ताओं को प्रत्याशी चयन प्रक्रिया की विस्तार से जानकारी दी गई। सांसद रूपकुमारी चौधरी और विधायक रोहित साहू सहित प्रदेश से आए पदाधिकारियों को कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए उन्हें अपना मार्गदर्शन दिया।बैठक में जिले एवं मंडल,मोर्चा प्रकोष्ठ के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ ही निकाय के वर्तमान जनप्रतिनिधि भी शामिल हुए। सम्मेलन की शुरूवात भारत माता के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर की गई।इस दौरान सम्मेलन में सांसद रूपकुमारी चौधरी ने कहा कि केन्द्र और राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बेहतर काम कर रही है।निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत में भाजपा के अधिक से अधिक लोग चुनकर आयेंगे तो सरकारी योजनाओं का धरातल में बेहतर क्रियान्वयन होगा।पार्टी भी मजबूत होगी।सांसद ने कहा कि पार्टी में सभी कार्यकर्ता योग्य है,पार्टी सभी का सम्मान करती है।परंतु अधिकृत प्रत्याशी एक ही हो सकता है।सभी को टिकट देना संभव नही है।इसके लिए आप सब मिलकर सक्रिय और योग्य व्यक्ति का चयन करें।निकाय चुनाव काफी कठिन होता है।एक एक मत का महत्व होता

है।अच्छे कार्यकर्ता का चयन होगा तो हमारी ही जीत होगी।

सम्मेलन में विधायक रोहित साहू ने कहा कि कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास और मेहनत से केन्द्र और राज्य में भाजपा की सरकार बनी है। भाजपा की सरकार बनने के गांव और गरीबो के सपने फिर पूरे होने लगे है। पक्की मकान, पक्की सड़क, पक्की स्कुल, पर्याप्त बिजली, शुध्द पेयजल जैसी समस्या सरकार ने दूर की है। उन्होंने कहा कि अब आने वाला चुनाव आप सभी कार्यकर्ताओं का चुनाव है, मै विश्वास दिलाता हूँ कि हम सब मिलकर आपको जिताने का पूरी ईमानदारी और ताकत के साथ प्रयास करेंगे।कार्यक्रम में संगठन सह प्रभारी किशोर महानंद ने भी कार्यकर्ताओं मे उत्साह भरा है।उन्होंने कहा कि यह चुनाव कार्यकर्ता के नेता बनने का चुनाव है।आप सभी गंभीरता से चुनाव लड़े है।उन्होंने कहा कि टिकट मांगने का सभी का अधिकार है।सभी पार्टी के लिए परिश्रम करते है।इसमें मनमुटाव नही हो चाहिए।जिसे पार्टी अवसर देगी उसे मिलकर जिताना है। हमारा लक्ष्य कमल निशान को जिताना है।इसके पहले चुनाव प्रभारी सुरेन्द्र पाटनी व डॉ किरण बघेल ने चयन समिति के गठन और प्रत्याशी चयन को लेकर पूरी प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी।उन्होंने कहा कि तीन नाम का पैनल बनेगा। जिसमें सोच विचार के बाद अधिकृत प्रत्याशी की घोषणा होगी।इसके पहले सम्मेलन में भाजपा जिला अध्यक्ष अनिल चंद्राकर ने कहा कि विधानसभा और लोकसभा चुनाव में जीत के बाद कार्यकर्ता उत्साहित है।निकाय में सरकार बनाने एकजुट है।निकाय चुनाव में भाजपा बेहतर प्रदर्शन करेगी। सम्मेलन में पूर्व सांसद चंदूलाल साहू,पूर्व संसदीय सचिव गोवर्धन मांझी,पूर्व विधायक संतोष उपाध्याय,डमरुधर पुजारी,डॉ श्वेता शर्मा,भागीरथी मांझी,राजेश अवस्थी, कुंज बिहारी बेहरा,गफ्फु मेमन,रेखा सोनकर,खोमन चंद्राकर,राहुल सेन,पुनीत राम सिन्हा, योगेश शर्मा,छाया राही,राधेश्याम सोनवानी,सागर मयाणी अजय रोहरा, तोकेश्वरी मांझी,नेहा सिंघल,केशरी ध्रुव,चंद्रशेखर साहू, शंकुतला नायक,महेश यादव,सुरेन्द्र सोनटेके,कमल सिन्हा,प्यारेलाल सोनकर,रुद्राक्ष साहू, गुरूनारायण तिवारी,रिकेश साहू,मनीष हरित,आसिफ मेमन सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजुद थे।

# यातायात पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा माह के तहत हेलमेट पहने मोटरसाइकिल चालकों को फूल देकर किये सम्मान

**गरियाबंद ( समय दर्शन )।** जिला मुख्यालय में सड़क सुरक्षा माह के तहत गुरुवार शाम को स्थानीय जिला कार्यालय भवन के सामने यातायात पुलिस द्वारा ऐसे मोटरसाइकिल चालकों जिन्होंने हेलमेट पहने थे उन्हें फूल भेट कर सम्मानित किए।आयोजित इस सड़क सुरक्षा माह में पुलिस विभाग द्वारा लोगो को यातायात के प्रति जागरूक करने हर दिन एक नया पहल किया जा रहा है।जिसमे आज उन मोटरसाइकिल चलाने वालों का सम्मान किया गया जिन्होने हेलमेट पहने हुए थे।ज्ञात हो कि पिछले समय से गरियाबंद यातायात पुलिस द्वारा लोगो को मोटरसाइकिल में तीन सवारी न चलने,नशे की हालत में वाहन न चलाने,हेलमेट पहनने जैसे विभिन्न यातायात नियमो का पालन करने जागरूक किया जा रहा था।वही वर्तमान में चल रहे सड़क सुरक्षा के दौरान मोटरसाइकिल चालको द्वारा हेलमेट पहनकर आते देख उनकी जागरूकता पर गरियाबंद यातायात पुलिस द्वारा मोटरसाइकिल चालको को गुलाब फूल देकर सम्मान किये साथ अन्य लोगो को हेलमेट पहनने के लिए जागरूक करने मोटरसाइकिल चालको से अपील किये। यातायात प्रभारी रामाधार मरकाम ने बताया कि आज एक आज के समय में मोटरसाइकिल दुर्घटना में अधिकांश लोगों को गम्भीर चोट तब लगती है जब वे हेलमेट नही पहने होते है।क्योंकि मोटरसाइकिल दुर्घटना में हेलमेट नही पहने होने से सिर में चोट लगने से दुर्घटना गम्भीर हो जाता।वही हेलमेट पहने होने से हाथ पैर के चोट लगती है जिसे ठिक किया जा सकता है। इन सब कारणों के चलते पुलिस विभाग हेलमेट पहनने लगातार अपील करती है।इस दौरान धर्मेंद ठाकुर,विकास कश्यप, अनिल पांडे,वीरेंद्र पटेल,संजय सूर्यवंशी की उपस्थिति थे।

## नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं पलाश कृष्ण विश्वास (PALASH KRISHNA VISHWAS) पिता सुभाष चन्द्र विश्वास (SUBHASH CHANDRA VISHWAS) उम्र 21 वर्ष निवासी क्वाटर न. 5/2, मैत्री रोड बी.एस.एन. एल. कालोनी रुआबांधा भिलाई, तह. व जिला दुर्ग छ0ग0 यह शपथ करता हूं कि मैंने अपना यह पुराना नाम पलाश कृष्ण विश्वास (PALASH KRSNA VISHWASH) पिता सुभाष चन्द्र विश्वास (SUBHASH CHANDRA VISHWASH) को त्याग कर नया नाम पलाश कृष्ण विश्वास (PALASH KRISHNA VISHWAS) रख लिया हूं।

अत: आज से मुझे समस्त, शासकीय, अर्द्धशासकीय व अन्य दस्तावेजों में मेरे नये नाम पलाश कृष्ण विश्वास (PALASH KRISHNA VISHWAS) पिता सुभाष चन्द्र विश्वास (SUBHASH CHANDRA VISHWAS) से ही जाना पहचाना जावें।

**शपथकर्ता**
**पलाश कृष्ण विश्वास**
**निवासी- क्वाटर न. 5/2, मैत्री रोड, बी.एस.एन.एल. कालोनी रुआबांधा भिलाई, तह. व जिला दुर्ग ( छ.ग़. ) मो. 9425001471**

## न्यायालय व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ श्रेणी, पाटन जिला- दुर्ग (छ.ग.)

**मुकदमें के फैसले के बारे में समन्स**
**( व्यवहार प्रक्रिया संहित, आदेश 5 नियम 1 और 5 )**
**वाद क्रमांक 09/अ/ सन् 2025**

**आवेदक - भुनेश्वर पटेल वगै.**
**अनावेदक - आम जनता**
**बनाम - आम जनता**

क्योंकि वादी / आवेदक ने आपके विरूद्ध दावा वास्ते घोषणा एवं स्थायी निषेधाज्ञा का वाद प्रस्तुत किया है, आपको इस समंस द्वारा आदेशित किया जाता है कि आप इस न्यायालय में पेशी दिनांक 31 माह 01 सन् 2025 को सुबह 11 बजे स्वयं या ऐसे किसी प्लीडर / अधिवक्ता द्वारा उपसंजात हो सकते है, जिसे सम्यक् अनुदेश दिये गये हों और जो इस वाद से संबंधित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सकें। आपको यह निर्देश दिया है कि आप उस दिनांक को अपनी प्रतिरक्षा का लिखित कथन प्रस्तुत करें और उस दिन ऐसी सब दत्तावेजों जो आपके अभिरक्षा या शक्तियों में है, पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या प्रतिदावा आधारित है और आप यदि किसी अन्य दस्तावेज समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है, तो आप ऐसे दस्तावेजों की, लिखित कथन के साय उपावन की जाने वाली सूची में प्रविष्टि करें।

आपको सूचित किया जाता है कि आप उक्त बतायी गई पेशी तिथि को इस न्यायालय में उपसंजात नही होंगे तो वाद की सुनवाई और निराकरण आपकी अनुपस्थिति में किया जावेगा।

आज दिनांक 14/01/2025 को न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

मुहर

**न्यायालय व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ श्रेणी, पाटन**
**पाटन जिला- दुर्ग ( छ.ग. )**

**कार्यालय, कार्यपालन अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग बालोद**
Phone No. :- 07749-222370, Email Id :- ee-res.balod@gov.in

**( E-Tender ) सूचना प्रथम बार**

**क्रमांक / 15 / व.ले.लि./ग्रा.यां.से./2024-25 बालोद, दिनांक 15.01.2025**

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत लोक निर्माण विभाग में "डी" - वर्ग एवं उच्च श्रेणी में ठेकेदारों पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र - "अ" पर दर्शित कार्य हेतु प्रतिशत दर प्राप्त करने ऑनलाईन ई-निविदा दिनांक 31.01.2025 तक आमंत्रित की जाती है। कार्य पूर्ण करने की अवधि 04 माह वर्षा ऋतु सहित

| क्रमांक | कार्य का नाम एवं स्थल | ठेके की अनुमानित लागत लाख रू. में | धरोहर राशि रू. में |
|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 |
| 1 | सीसीरोड निर्माण कार्य राजाराव पठार बाबा पूजा स्थान एन. एच. - 30 से देव स्थल तक 400 मीटर ग्राम एवं ग्राम पंचायत करेंझर विकासखण्ड गुरूर जिला बालोद टेण्डर न. | 38.50 | 28900/- |

उपरोक्त कार्य की निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in में दिनांक 15.01.2025 से देखी जा सकती है।

**कार्यपालन अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग बालोद**
**जिला - बालोद (छ. ग.)**

G-242505337/2

# नगर पंचायत अध्यक्ष के लिए सोनिया सुमित अग्रवाल की दावेदारी माना जा रहा सबसे मजबूत

**बसना (समय दर्शन)** । नगर पंचायत बसना के अध्यक्ष पद हेतु आरक्षण की प्रक्रिया के बाद सामान्य महिला वर्ग घोषित होते ही अब नगर मे चुनावी बयार बहने लगी है। शहर के हर चौक चौराहे , चाय दुकान, गली मोहल्लों के नुक्कड़ पर एक ही चर्चा है, अगला नगर पंचायत अध्यक्ष कौन होगा?

यहाँ शहर की राजनीति में सोनिया सुमित अग्रवाल को सबसे मजबूत दावेदार के रूप में सामने दिखाई दे रहे हैं। भाजपा से सबसे मजबूत दावेदार के रूप में भाजपा से सोनिया सुमित अग्रवाल का नाम नये चेहरे के रूप में सामने आया है। श्रीमती सोनिया सुमित अग्रवाल 2013 ,2018 विधानसभा व लोक सभा चुनाव से लगातार सक्रिय होकर भाजपा के लिए कार्य कर रही हैं। नगर पंचायत चुनाव के अलावा विगत वर्ष 2023विधानसभा चुनाव में भी डोर टू डोर दौरा भाजपा प्रत्याशी को चुनाव जिताने में भी इनकी भूमिका अग्रणी रही है। सोनिया

सुमित अग्रवाल को भाजपा टिकट देती है तो जीत का सेहरा भाजपा की झोली में जाने से इंकार नहीं किया जा सकता।

सोनिया सुमित अग्रवाल मुखर होकर वार्ड व नगर की समस्यायों को लेकर अपनी आवाज हमेशा बुलंद की हैं। समाज सेवा में लगातार सक्रिय,विधानसभा व लोकसभा चुनाव में इनकी भूमिका एक समर्पित कार्यकर्ता की रही है। टिकट, पार्टी शीर्ष नेतृत्व के ऊपर निर्भर करेगा कि किसे अपना प्रत्याशी बनायेगी। पर बसना नगर मे चारों तरफ इनके नाम के चर्चे हैं । आम लोगों का कहना है कि, सोनिया सुमित अग्रवाल को पार्टी अपना उम्मीदवार बनाती है तो जीत का शेहरा उनके झोली मे होगी।

वैसे चुनाव व उसके परिणाम काफी दूर है,पर देखा जाय तो अनेक समाज के युवा,महिला एवं वरिष्ठजन सोनिया सुमित अग्रवाल को भावी नगर अध्यक्ष के रूप मे साथ देने तैयार दिखाई दे रहे हैं ।

## संक्षिप्त-खबर

### वन परिक्षेत्राधिकारी बसना एवं टीम ने पकड़ा लकड़ी से भरा ट्रक

**बसना ( समय दर्शन )।** बीती रात्रि गस्त के दौरान रात्री 10:00 बजे ग्राम जेवरा के पास वाहन क्रमांक सी जी 04 एम क्यू 5006 में अवैध रूप से 20 घ.मी. 10 चट्टा मिश्रित जलाऊ लकड़ी परिवहन करते पाये जाने पर पंकज राजपूत वन मण्डलाधिकारी महासमुन्द के निर्देशानुसार एवं अनिल कुमार भास्करन, उप वन मण्डलाधिकारी सरायपाली के मार्गदर्शन में सुखराम निराला, वन परिक्षेत्र अधिकारी बसना के कुशल संचालन में स.प.अ. बसना बैजनाथ बारीक, परिसर रक्षी सराईपाली टिकेश्वर साव, परिसर रक्षी हाड़ापथरा देवानंद सोनी तथा सुरक्षा श्रमिकों के सहयोग से वाहन को जप्त कर पी.ओ.आर. नंबर 19903/06 दिनांक 15.01.2025 जारी कर छ.ग. अभिवहन (वनोपज) नियम 2001 की धारा 03, 05, 14, 16 के तहत् कार्यवाही कर वाहन एवं जप्तशुदा वनोपज को राजसात की कार्यवाही की गयी।

### उद्यान एवम सरोवर हमारी धरोहर है, नगर पंचायत में सफाई अभियान चलाकर दिया संदेश

**पाटन ( समय दर्शन )।** नगर पंचायत पाटन में हेमंत कुमार वर्मा मु.न.पा.अधिकारी ने वार्ड क्रमांक 3 स्थिति हनुमान सरोवर एवं उद्यान में विशेष अभियान चलाकर स्वंय मैदान में उतरकर साफ-सफाई अभियान से जुड़ गए है। उन्होंने उस अभियान के माध्यम से सरोवर हैं हमारी धरोवर का दिया सन्देश दिया । उक्त अभियान में अर्जुन कुमार निर्मलकर उपअभियंता , सफाई प्रभारी जलज पाण्डेय , पी आई यू योगेश भोई, प्रवीण कुम्भकार ,पदुम, छोटू यादव, दुष्यंत भट्ट एवम सफाई की टीम की सहभागिता रही ।

### अपर कलेक्टर ने किया विभिन्न कार्यालयों का औचक निरीक्षण, 14 कर्मचारी मिले अनुपस्थित

**मुंगेली ( समय दर्शन )** कलेक्टर राहुल देव के निर्देशानुसार अपर कलेक्टर जी.एल.यादव एवं डिप्टी कलेक्टर अजय शतरंज ने सुबह 10 बजे उप संचालक कृषि, उद्यानिकी और रेशम कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने वहां उपस्थिति पंजी का अवलोकन किया। इस दौरान कृषि विभाग के कार्यालय में उप संचालक एम. आर. तिग्गा सहित 14 कर्मचारी अनुपस्थित पाए गए। अपर कलेक्टर ने अनुपस्थितों पर नाराजगी जाहिर करते हुए कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए। उन्होंने कहा कि शासन के नियमानुसार सभी अधिकारी-कर्मचारी कार्यालयीन समय पर कार्यालय में उपस्थित होकर अपने दायित्वों का निर्वहन करें। इस दौरान संबंधित अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

### निदान-1100 में करें शिकायत दर्ज, निगम करेंगी 24 घंटो में निराकरण

**दुर्ग।** नगर निगम प्रशासन ने निदान-1100 में शहर से ऑनलाइन दर्ज समस्त नागरिकों से अपील, आस पास के क्षेत्रों में कचरा या गंदगी दिखने पर करें निदान 1100 पर शिकायत करें।कलेक्टर/निगम प्रशासक सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी व आयुक्त सुमित अग्रवाल द्वारा शहर के समस्त आम नागरिकों से अपील है कि, वार्डों में अपने आस पास के रहवासी क्षेत्रों, व्यावसायिक क्षेत्रों, सार्वजनिक स्थानों आदि पर कचरा या गंदगी दिखने पर तुरंत नगर निगम के टोल फ्री नंबर निदान 1100 पर शिकायत दर्ज करे,जिसका 24 घंटों के अंदर समाधान किया जाएगा। और इस प्रकार अपने शहर को स्वच्छ बनाने में सहयोग प्रदान करेंगें।निदान 1100 में साफसफाई सड़क, बिजली, पानी, साफ सफाई सहित अन्य समस्याओं का समय-सीमा में निराकरण कर नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग की ग्रेडिंग में ए ग्रेड हासिल कर रही है। निगम प्रशासन ने निदान-1100 में ऑनलाइन शिकायत प्राप्त होने के बाद न केवल निर्धारित समय सीमा में निराकरण किया, बल्कि कलेक्टर/निगम प्रशासक सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी व आयुक्त सुमित अग्रवाल के निर्देशानुसार निराकरण के बाद शिकायतकर्ता के फोन नंबर पर संपर्क कर फीडबैक लेने का कार्य भी किया जाएगा।

# संत चार्ल्स विद्यालय बसना भव्य विज्ञान प्रदर्शनी

**बसना ( समय दर्शन )।** संत चार्ल्स उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बसना के प्रांगण में बीते दिन भव्य विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा पहली से बारहवीं तक के विद् ?यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस विज्ञान प्रर्दशनी में फादर प्राचार्य मैथ्यूज रात्रे के नेतृत्व में यह आयोजन हुआ। जिसमें प्रमुख अतिथि विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी जे आर डहरिया एवं विभिन्न शालाओं के सम्मानीय शिक्षक वृन्द मूल्यांकन कर्ता के रूप में अपना अमूल्य समय दिये। जिसमें सचिन देवानम शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक शाला बसना, ललित मिश्रा-शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला बाराडोली, जितेन्द्र - शासकीय हाईकूल - नौगडी, जगबन्धु ताण्डी शासकीय हाईस्कूल साल्हेतराई, योगेश प्रधान - सेजेस बसना, बसना, श्रीमनी संयुक्ता प्रधान एव सेजेस अन्य गणमान्य अतिथियों व अवर लेडी आफ प्रोविडस के सुपीरियर सिस्टर मैरलीना एवं अन्य सिस्टर भी सम्मिलित होकर बच्चों को उत्साहित किये।

**प्रदर्शनी का परिणाम इस तरह रहा**- प्रथम स्थान संगीत प्रधान कक्षा 10वीं, माडल का नाम स्मार्ट सिटी,द्वितीय-कु. ज्योतिका पटेल - कक्षा 11वीं विषय कामर्स सिटी, तृतीय-कु. रेणुका पटेल कक्षा- 12वीं विषय जल संग्रहण, एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं का भी विशेष सहयोग रहा।

# पिथौरा मे नगर पंचायत चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज

**पिथौरा( समय दर्शन )।** पिथौरा नगर पंचायत चुनाव के लिए आरक्षण की प्रक्रिया पूर्ण होते ही अब चुनावी माहौल की सरगर्मियां तेज हो गयी है। चुनावी मैदान में कूदने वाले नेता अभी से जनसंपर्क में जुट गए है, वहीं वार्डों में लगातार चुनाव जीत कर पार्षद बनने वाले नेता पुन: पार्षद बनने के लिए स्थानीय नेता गुणा गणित मे लग गये हैं।

पिथौरा नगर पंचायत इस बार सामान्य (मुक्त) घोषित हुई है। लिहाजा यहां मुकाबला भी कड़ा होने की संभावना है। वर्तमान में अध्यक्ष का कार्यकाल पूर्ण कर चुके आत्माराम यादव कांग्रेस की ओर से पुन: सशक्त दावेदार माने जा रहे हैं।

श्री यादव खल्लारी विधायक द्वारिकाधीश यादव के अनुज एवं स्थानीय जनपद उपाध्यक्ष मुकेश यादव के अग्रज है। विगत कार्यकाल में उन्होंने नगर मे विकास के अनेक कार्य कराये हैं, जिसमें गौरव पथ एवं नया पेयजल पाइप लाइन, खेल मैदान एवम मंगल भवन प्रमुख हैं। इसके अलावा कांग्रेस से टिकट की दौड़ में पूर्व पार्षद एवं स्थानीय शीतला समाज के अध्यक्ष प्रेमलाल सिन्हा, विकास शर्मा एवं लगातार तीन बार चुनाव जीते

पार्षद राजू सिन्हा भी इस दौड़ मे शामिल हैं।

दूसरी तरफ भाजपा मे टिकट के दावेदारों की लम्बी फेहरिस्त है, परन्तु टिकट के लिए सबसे सशक्त दावेदार के रूप में लगातार चार बार नगर पंचायत के अध्यक्ष रह चुके देवसिंह निषाद का नाम उभर कर सामने आ रहा हैं। श्री निषाद अपने व्यवहार एवं आम लोगों से आत्मीय संबंधों के लिए जाने जाते हैं। वहीं भाजपा में ही चार बार पार्षद रह चुके मन्नू लाल ठाकुर भी दावेदारों की सूची में है। इसके अलावा विधायक प्रतिनिधि रविन्दर आजमानी, विधायक प्रतिनिधि एवं व्यापारी एकता मंच के पूर्व अध्यक्ष अनूप अग्रवाल भी अध्यक्ष पद हेतु टिकट की दौड़ में शामिल हैं। सूत्रों के अनुसार स्थानीय स्काउट गाइड संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सत्यनारायण अग्रवाल भी हो सकते हैं। यहाँ राजनितिक पार्टियों से हट कर नगर के समाजसेवी आकाश एरन भी चुनावी मैदान में कूद सकते हैं। हालांकि वे चुनावी राजनीति से दूर रहने की बाते कह चुके हैं, परन्तु श्री एरन के पास युवाओं की काफी बड़ी फेहरिस्त है। जिसका प्रदर्शन वे विभिन्न पर्व के अवसर पर करते रहते हैं, जिससे लगता है कि समर्थकों के दबाव में चुनावी मैदान मे कूद सकते हैं।

बहरहाल, नगर पंचायत चुनाव की तिथि घोषित होने के पहले ही पार्षद एवं अध्यक्ष प्रत्याशी तय होने की संभावना को देखते हुए दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दलों में स्थानीय स्तर पर चुनावी गुणा गणित चलने लगा है।

# जामगांव आर में पूर्व सीएम भूपेश बघेल की अनुशंसा से करोड़ों के विकास कार्य हुए...अशोक साहू

- ग्राम पंचायत जामगांव आर में 45लाख के विभिन्न विकास कार्यों का हुआ लोकार्पण!

**पाटन ( समय दर्शन )।** ग्राम पंचायत जामगांव आर में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण समारोह(45लाख)के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री/विधायक पाटन भूपेश बघेल जी के प्रतिनिधि अशोक साहू उपाध्यक्ष ज़िप दुर्ग थे,अध्यक्षता रूपचंद साहू सभापति जप पाटन ने की,विशेष अतिथि राजेश ठाकुर अध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस कमेटी जामगांव आर,सुनीता चंद्राकर महिला ब्लॉक कांग्रेस कमेटी जामगांव आर,जयप्रकाश चंद्राकर पूर्व सभापति जिप दुर्ग,रूपेंद्र शुक्ला महामंत्री जिला कांग्रेस,भेष आठे जोन प्रभारी,अमित अग्रवाल सहसचिव ब्लॉक कांग्रेस,चतुर साहू सेक्टर प्रभारी के आतिथ्य में संपन्न हुआ। जिप उपाध्यक्ष अशोक साहू ने जामगांव आर सहित पाटन विधानसभा एवं छत्तीसगढ़ के विकास में हमारे क्षेत्र के लाडले विधायक भूपेश बघेल जी नाम इतिहास में दर्ज हो गया है।भूपेश सरकार में शिक्षा,सिंचाई,सड़क,क्रेडा,मंडी बोर्ड,सहित अन्य अधोसंरचनाओं के लिए राशि उपलब्ध निरंतर हो रही थी,आज विष्णुदेव सरकार में 1साल बाद भी विकासकार्यों के लिए1रुपए की राशि पंचायतों को नहीं मिल पाई।

ब्लॉक अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि किसान, युवा, आदिवासी, विद्यार्थी, कर्मचारी, अधिकारी सहित सभी वर्गों परेशान एवं हताश हो गए है।मंहगाई चरम सीमा,प्रदेश में हत्या, बलात्कार, चोरी, हसदेव की कटाई,अवैध खनन,नशा के कारोबारी में बढ़ोतरी से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है।

सभापति रूपचंद साहू ने विकास कार्यों का बखान करते हुए हम सभी जनप्रतिनिधि पंच, सरपंच,जनपद,जिला सदस्यों को पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की कड़ी में जुड़कर कार्य करने का सौभाग्य मिला।

लोकार्पण में समरसता भवन,नाली निर्माण,सीसी रोड,शेड निर्माण,मंच निर्माण,जिला विकास निधि से टैंकर ट्राली,पानी टंकी पंप सहित,पाइप लाइन विस्तार कार्य का हुआ।

सरपंच राजकुमार ठाकुर ने ग्राम में हुए करोड़ों के विकास कार्यों की सौगात के लिए पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सहित सभी अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किए।

इस अवसर पर तीरथ चंद्राकर, किवेश चंद्राकर, राधेश्याम राठी, देवकी चंद्राकर, ज्योतिष यादव,नरेश महतो, ऋषभ चंद्राकर, रघुबर सेन,डी डी मानिकपुरी, रामकृष्ण साहू, पोषण साहू, नंदिनी साहू, ओमिन सेन, भानमती साहू, पुरुषोत्तम भीमगंज, गणेश्वर यादव, जागेश्वर ठाकुर, जुगरु दास मानिकपुरी, गजाधर ठाकुर, गोकुल निर्मल पंचगण एवं ग्रामवासी उपस्थित थे।

# बैलाडीला प्रीमियर लीग में एसीजी टीम रहीं विजयी

**किरन्दुल।** स्पोर्ट्स क्लब रेल्वे किरन्दुल के तत्वाधान में जिला स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता बैलाडीला प्रीमियर लीग का आयोजन किया गया।प्रतियोगिता का अंतिम एवं फाइनल मुकाबला बुधवार रात 08 बजे स्थानीय फुटबॉल ग्राउंड में महाराजा रॉयल्स बनाम एसीजी के मध्य खेला गया।जिसमें टॉस जीतकर महाराजा रॉयल्स ने बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया एवं निर्धारित ओवर में 103 रन बनाया वहीं लक्ष्य का पीछा करते हुए एसीजी टीम ने आसानी से लक्ष्य को हासिल करते हुए मैच जीतकर बैलाडीला प्रीमियर लीग का खिताब अपने नाम किया।मौके पर एनएमडीसी महाप्रबंधक उत्पादन आर राजाकुमार,उपमहाप्रबंधक (कार्मिक) बी के माधव,नगरपालिका अध्यक्ष मृणाल राय,महाप्रबंधक विद्युत एम सुब्रमण्यम,इंटक सचिव ए के सिंह,एसकेएमएस अध्यक्ष देवरायलु एवं भारी संख्या में दर्शकगण उपस्थित थे।

# आबकारी विभाग की छापेमार कार्रवाई, 13.5 लीटर कच्ची शराब और 105 किग्रा महुआ लाहन जब्त

**मुंगेली ( समय दर्शन )** कलेक्टर राहुल देव के निर्देशानुसार जिले में अवैध शराब पर रोक लगाने आबकारी विभाग द्वारा छापेमार कार्रवाई की जा रही है। सहायक आयुक्त आबकारी राजेश जायसवाल ने बताया कि विभागीय टीम द्वारा ग्राम हरदी में छापेमार कार्रवाई कर 07 लीटर कच्ची महुआ शराब जब्त कर किया गया। इसी तरह ग्राम अमलीकापा में 6.5 लीटर कच्ची शराब और 105 किलोग्राम महुआ लाहन जब्त किया गया। उन्होंने बताया कि आरोपियों के विरूद्ध आबकारी अधिनियम के तहत कार्रवाई की जा रही है।

# नीलांचल सेवा समिति ने मनाया सातवां स्थापना दिवस

**बसना ( समय दर्शन )।** बसना विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल के जगदीशपुर रोड स्थित विधायक कार्यालय में नीलांचल सेवा समिति के स्थापना दिवस गुरुवार को नीलांचल सेवा समिति का सातवां स्थापना दिवस जगन्नाथ महाप्रभु एवं मां भारती की पूजा अर्चना कर केक काटकर धूमधाम से मनाया गया तथा 'नीलांचल ध्वज' को सलामी दी गई। नीलांचल गीत गायन के बाद नीलांचल सेवा समिति के संस्थापक एवं विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल के बड़े सुपुत्र एवं नगर पंचायत बसना उपाध्यक्ष सुमित अग्रवाल ने संदेश वाचन किया।

उपाध्यक्ष सुमित अग्रवाल ने नीलांचल सेवा समिति के उद्देश्यों एवं कार्यक्षेत्रों से अवगत कराते संदेश वाचन का जय जगन्नाथ जय नीलांचल की जयकारे से शुरुआत करते हुए कहा कि साथियों 16 जनवरी 2018 को नीलांचल सेवा समिति की स्थापना करते वक्त विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल के मन मस्तिष्क में केवल एक ही भावना जागृत हो रही थी मानव सेवा ही माधव सेवा है। नर सेवा नारायण सेवा के उद्देश्यों को चरितार्थ करते हुए न केवल छत्तीसगढ़ में अपितु संपूर्ण विश्व पटल पर नीलांचल सेवा समिति को एक नई पहचान दिलाने में नीलांचल सेवा समिति ने ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर नये किर्तिमान स्थापित किये।

मेरा क्षेत्र, मेरा गांव, मेरे लोग,मेरा परिवार उनकी उन्नति,उनका विकास ही नीलांचल सेवा समिति का प्रमुख उद्देश्य रहा है। विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत गांव के अंतिम छोर में बैठे व्यक्ति तक पहुंच कर सेवा कार्यों के माध्यम से उनकी समस्याओं, आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को समझकर प्राथमिकता के आधार से कार्य करना नीलांचल सेवा समिति का उद्देश्य रहा है। नीलांचल सेवा समिति ने अपने निस्वार्थ सेवा भावनाओं के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु देश दुनिया के नक्शे में हमारे बसना विधानसभा को रेखांकित किया है।

नीलांचल सेवा समिति अपनी स्थापना काल के अल्प समय में ही गोल्डन बुक आफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड के साथ भव्य हरिनाम संकीर्तन कर एक स्वर्णिम उपलब्धि के साथ सफर की शुरुआत की। नीलांचल सेवा समिति ने कई विशाल स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन,नेत्र शिविरों का आयोजन, योग शिविर का आयोजन कर लाखों जरूरतमंद लोगों को स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया। अनगिनत खेल आयोजन कर क्षेत्र के खिलाड़ियों को संसाधन उपलब्ध कर कोचिंग सेवाएं प्रदान कर देश विदेश में अपनी प्रतिभाओं को हुनर दिखाने का मौका दिया। कोरोना काल में कई मरीजों को स्वास्थ्य लाभ, खाद्य सामग्री की व्यवस्था कर लगातार दो वर्षों तक उनके सुख-दुख का ख्याल रखा। कई वृहद धार्मिक आयोजन कराकर आयोजनों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित किया एवं कई नवीन मंदिरों के निर्माण एवं जीर्णोद्धार में अपना तन मन धन लगाकर प्रभु की सेवा में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया।

निशुल्क एंबुलेंस सहायता के माध्यम से 1000 से अधिक मरीजों को कई अस्पतालों में पहुंचाने और उन्हें स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 16 जनवरी 2022 को नीलांचल सेवा समिति ने एक और गोल्डन बुक आफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड की उपलब्धि श्रीमद्भागवत कथा के माध्यम से अपना नाम अंकित किया। इन्ही सब सामाजिक धार्मिक, राजनीतिक, सेवाभावी कार्यों के कारण द हैती युनिवर्सिटी नई दिल्ली ने विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल को समाज सेवा के क्षेत्र में डाक्टरेट की मानद उपाधि से अलंकृत किया।

नीलांचल सेवा समिति का गठन जिस उद्देश्य से हुआ उसमें हम शत प्रतिशत खरे उतरे हैं मैं नीलांचल सेवा समिति के लाखों कर्मठ लगनशील सहयोगी कार्यकर्ताओं का बहुत ही हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिनके कारण बसना विधानसभा को जरुरतमंद लोगों को नीलांचल सेवा समिति के माध्यम से सहयोग कर उन्हें लाभ प्रदान किया। आने वाले समय में भी लोगों को नीलांचल सेवा समिति का लाभ मिले इसलिए नीलांचल सेवा समिति अपने कार्य को सतत आगे नये माध्यमों के साथ जारी रखेगी। सेवा कार्यों को और व्यापक रुप से विस्तार दिया जा सके इसके लिए कृत संकल्पित होकर बसना विधानसभा में प्रतिनिधित्व का अवसर और आशीर्वाद क्षेत्र की जनता जनार्दन ने उन्मुक्त मन से विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल को प्रदान किया। इसका नतीजा यह है कि मात्र एक वर्ष के कार्यकाल में क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए लगभग 400 करोड़ रुपए के बजट स्वीकृत कराया गया। आगे भी हम सब मिलकर बसना विधानसभा को देश में एक आदर्श विधानसभा स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध होकर कार्य करेंगे,ऐसी आशा और अपेक्षा है।

आप सभी को नीलांचल सेवा समिति स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाए।

नीलांचल सेवा समिति के स्थापना दिवस के अवसर पर नगर पंचायत उपाध्यक्ष सुमित अग्रवाल ने नगर स्थित स्वास्थ्य केंद्र एवं अस्पताल में इलाज चल रहें मरीजों से मुलाकात कर हालचाल पूछे तथा फल व खाद्य सामग्री वितरित किए। इस दौरान भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश अग्रवाल, भाजपा नेता रामचंद्र अग्रवाल,मण्डल अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, विधायक कार्यालय प्रभारी प्रकाश सिन्हा, विधायक प्रतिनिधिगण, भाजपा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं एवं नीलांचल सेवा समिति के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी मौजूद थे।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग ( छ.ग. ) 491111 से मुद्रित कर बी-4, प्रेस काम्प्लेक्स, इंदिरा मार्केट, दुर्ग छ.ग. 491001 से प्रकाशित। संपादक :- रोहित खड़तकर,
समाचार संपादक : दामोदर राव, फोन नं.-0788-4051213, मो. 9827104452, रायपुर कार्यालय:-0771-4218364, ईमेल - samay.darshan191@gmail.com पं. क्र. CHHHIN/2011/41517 डाक पंजीयन क्रमांक छ.ग./दुर्ग/61/2024-26